श्रीः ।

नटनागरविनोद ।

श्रीयुतमहाराजकुमार

रतसिंहजीकृत ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयमें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५४, शके १८१९.

भूमिका।
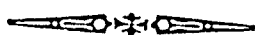
यह ग्रंथ मालवदेशाधीश प्रजापालनतत्पर महाराजाधिराज महाराजा श्री १०८ श्री राज सिंहजी सीतामऊराजधानीसिंहासनस्थके पुत्र महाराजकुमार रसिकशिरोमणि सुयशके अकूपार यथोक्तः--

दोहा-सियापुरी काशीपुरी, सिद्धदाससारूप ॥
विश्वनाथराजन्नृपति, रतनगजाननरूप॥१॥

बूँदीके कविराज मिश्रण सूर्यमलजी कृत-कवित्त।

मालवके मुकुटकुमाररतनेसतेरो, यशबहुरूप स्वांगआनतनटाँनके ॥ व्यालह्वैधराकोधूतधारैधवलीयकर, मरालह्वैसुरेनओझब्रह्माकेविमानके ॥ हिमकरह्वैकेभवभालबानिबैठोवीर, कंबूह्वैकैअधर अँगोछेभगवानके ॥ मल्लीमालतीह्वैछत्रधारिन

कोछोगावने, मोतीहैमिजाजीमुखचूमेंमहिलान के ॥ १ ॥

इत्यादि गुणविशिष्ट महाराजकुमार श्री श्री १०८ श्रीरत्नसिंहजी विरचित "नटनागरविनोद" नाम संवत् १९१० की सालमें पूर्ण हुवा ॥

दोहा--भूपदासदैसिकसुखद,कीनचंद्रिकाग्रंथ ॥
रत्नकवँरतिहिंसंगते,लह्योजुसाहितपंथ॥ १ ॥

अरु संवत्१९२०माघशुद्ध२के दिन इस असार संसारका सुख भोग आप श्रीकृष्णकेसायुज्य लोकको पधारे। तत्पश्चात् अधुना देशांतरस्थ महाशयोंकी इसग्रंथपै अति अपेक्षा अरु पुस्तकोंकी अलभ्यता देखिके इसी राजधानीके अमात्य कायस्थकुलावतंस पंचोली उपनामक पृथ्वीराजात्मज लालाहुलासरायानुज सज्जनवल्लभ हरिहरभक्तिपरायण लालाचाँदरायजीने अपने स्वामीके यश प्रकाशनार्थ इस ग्रंथको महाराजाधिराज महा-

राजश्री १०८ श्री बहादुरसिंहजीके समयमें इ
पुस्तककी प्रथमावृत्ति छापीगई अब की बा
शुद्धतापूर्वक निज-"श्रीवेङ्कटेश्वर" छपाखाना
छापकर प्रसिद्ध कियाहै ॥

दोहा--कवितारतनकुँवारकृत, सीतामऊसुवास
चांदरायचितयोंचह्यो, प्रभुयशकरनप्रकास ॥ १

आपका कृपाभिलाषी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई.

श्रीः।

श्रीश्री १०८ श्रीमहाराज

कुमाररतनसिंहजीकृत–

नटनागरविनोदप्रारंभः।

श्रीगणेशाय नमः।

सवैया--जायजपोंनिजजीहहुतें, ततोकर्म अनेकनतेतुतराहूं ॥ आपअमापरुथापउथापमें, पाप अनेकहिकोपुतराहूं ॥ सुथराहुं सदैवप्रपंचकेस्वांगमें,औरसुकर्मनते उतराहूं॥दीनहौंदीनहौंदीनमहा नटनागरकेदरबारपराहूं ॥ १ ॥

दोहा–काहूकाहिकेनालियो,गुरुमाहिमाकोपार॥
योंविचारिकैसेरहूं, तदपिलिखूंहियहार ॥२॥

छंदछप्पय–जयगुरुश्रूपादिनेशजगतपाखंडविहंडन॥जयगुरुश्रूपादिनेशतिमिरअघजुत्थविखंडन॥ जयगुरुश्रूपादिनेश सुयशपंकजसुखमंडन ॥ जयगुरु

श्रूपदिनेश दुष्टमत बुद्धीदंडन ॥ जयजयति श्रूपअकरनहरन करनकरावनदासकह ॥ जयजय दिनेशअज्ञान हर ज्ञानकरनअज्ञानजह ॥ ३ ॥ जयजयश्री गुरुश्रूपदासनिजपंथहलावन ॥ जयजय श्रीगुरुश्रूपचारयुगधर्मचलावन ॥ जयजयश्रीगुरु श्रूप बालबुद्धीबुधदावन ॥ जयजयश्रीगुरुश्रूप दासके कुकृतनसावन ॥ जयजयतिश्रूपऽया पंकअखिलसुगुणदेनअवगुणहरन ॥ जयजयति श्रूपपंकजचरण जगवंदनतारणतरन ॥ ४ ॥ जयश्रीगुरुजगजनक सृष्टिजडचेतनकरता॥जयश्री गुरुहरिएक जगतकेपालनभरता ॥ जय श्रीगुरुहररूपहरणब्रह्मांडनिकाया ॥ जयत्रिगुणात्मकएक श्रूपमंडितछलमाया ॥ जयजयसुरेश संतनसुखद दुष्टदंडदावेदभन॥गुरु हरिहिएकमूरतिकहत जातेमैंएकत्वगन ॥ ५ ॥ जयतिसच्चिदानंद रूपअनेकविराजत ॥ जयतिसच्चिदानंदभू-

पभूपनशिरगाजत ॥ जयतिसच्चिदानंद यूपर-
थधर्मसुलग्गन ॥ जयतिसच्चिदानंद खलन उरदाह
सुदग्गन ॥ जयजयअनंतअंतनकहत वेदशेषवि
धिहरसहित ॥ याहिनिमित्तमौनित्तगुरु औरन
धारतमोरचित ॥ ६ ॥ जयजयजयगुरुरूप सर्व
अघओघनसावन ॥ जयजयजयगुरुरूप द्वंदपाखं
डमिटावन ॥ जयजयजयगुरुरूप हरनविषया
विषदुर्मद ॥ जयजयजयगुरुरूप दासकोदेनअ-
भयपद ॥ जयजयउदार आधारमम विधिहरिहर
गुरुएकमय ॥ जयजयतिरूपतारनतरन जयजय
जयगुरुदेवजय ॥ ७ ॥ जयगुरुतेजप्रचंड वेदमर-
यादसुमंडन ॥ जयगुरुतेजप्रचंडतिमिरपाखंडविहं-
डन॥जयगुरुतेजप्रचंड घोरअघओघहिखंडन॥ज-
यगुरुतेजप्रचंड दुष्टमत दानव दंडन॥जयदीनबंधु
दासनसुखद जयकुबुद्धिकेकरनलय ॥ जयजय-
तिरूपतारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ ८ ॥

जयगुरुश्रूपदिनेश कंजदासनप्रफुलावन ॥ जयगुरु श्रूपदिनेश पकसंतनमनभावन॥ जयगुरुश्रूपादिनेश सर्वजगकेसुखकरता ॥जयगुरुश्रूपदिनेश कलुष दासन केहरता ॥ जयश्रूपरूपकारनकरन जयहरि हरत्रिगुणात्ममय ॥ जयजयतिश्रूपतारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ ९ ॥ जयगुरुव्यापकरूप आदिमध्यअंतनजाके ॥ रंगनरूपनरेख ग्रामधनधामनताके ॥ वेदनजानतभेद कौंनवाकेगुणगावैं ॥ ब्रह्माशेषमहेश खोजहेरेनहिपावैं ॥ जयएकअखिलआधारजग विश्वरूपब्रह्मांडमय ॥ जयजयतिश्रूप तारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ १० ॥ जयगुरुसूक्षमरूप एकरुअनेककहावत ॥ जयगुरुसूक्षमरूप पारकोऊनहिंपावत ॥ जयगुरुसूक्षमरूपव्योममयउपमाजाकी ॥ जयगुरुसूक्षमरूपकौंनजानैं गतिताकी॥ विराटरूपगावतनिगम निजदासनदा-

ताअभय ॥ जयजयतिश्रूपतारनतरनजयजयजय गुरुदेवजय ॥ ११ ॥ श्रीगुरुमेरेइष्ट औरकोउ मिष्ट नलागत ॥ श्रीगुरुमेरेइष्ट औरकान्निष्ठहित्या-गत ॥ श्रीगुरुमेरेइष्टजेष्ठकोहूनाहिंजानूं ॥ श्रीगुरुमेरे इष्ट अनिष्ट औरै पहचानूं ॥ श्रीगुरुप्रतापम-तभ्रष्टना धृष्ट कियोसबमेटिभय ॥ जयजयतिश्रू-पतारनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ १२ ॥ गुरूआदिवाराह गुरूनरसिंहकहाये ॥ गुरूरामाद्रि-जराम गुरूकछमीनिसुहाये ॥ श्रीगुरुबावनरूप कृष्णहयग्रीवसुजानहु ॥ गुरूबोधअवतार ॥ रूपकारणपहचानहु ॥ एकगुरूसर्व अवतारगि-न जगपालनकरतासुलय ॥ जयजयतिश्रूपता-रनतरन जयजयजयगुरुदेवजय ॥ १३ ॥

सवैया—गुणतीनहुंतेरचनाजगकी, सबअंतरश्रूप हिछाजतहै ॥ फिरएकहिश्रूपअनेकदिखावत, त्यों फिर एकहि भ्राजतहै ॥ सोइआदिसोईमध्यअंतक-

हावत, भूपसबैशिरगाजतहै ॥ कोउभूपकेरूपते बाहरनाँ, सबभूपकोरूपविराजतहै ॥ १४ ॥

कवित्त—महिमां गुरूकी सोईहरिकीविचारिलिखूं, यामें व्यंगदूषणबतावेअज्ञजानेका ॥ दोऊकी मँहिमाको तोवेदहूनकीन्होंभेद, जाहरअखेदइतचर्मचषमानेका ॥ दृष्टिमेंनआवेज्ञानचषमांचढाएविन, एकरूअनेक रूपरूपन बखानेका ॥ भूपसोहीभूपजाकोरूपहैअनूप देखो,देखबेमेंआवेसोहीजाहरहैछानेका ॥ १५ ॥

सवैया—फिरधूम्रतेहीनहैपीनपहारते, मीनकेमारग सो बतलावत ॥ तहांआदिनमध्यनअंतकहूं,रँगरूप नरेखअलेखचलावत॥केउ गावैहजारनजीभहुते तेउ हारि रहेकोउपार नपावत ॥ सोइभूपअखंडविराजतहै, बुधवानसोईनरभूपकोगावत ॥ १६ ॥

कवित्त—श्रीगुरुप्रतापसांचोकहतसुनायसब, कृपाकीकटाक्षसांचझूंठधारिबोकरैं ॥ हमतोगुणी न

निगुणीहैंआदिअंतहीते, श्रूपकेसमीपरहैंवातेररिबो करैं॥ विद्याकोअभ्यास नअविद्याकोकरैंउपाय, महाजडमूढदेखियूंहीभिरिबोकरैं॥चतुरकीसभामेंचढैचाहबाढैसबहूकी, ॥ वित्तनहिंपासपैकवित्तकारिबोकरैं ॥ १७ ॥

संयोगश्रृंगारक०—ललिता पठाई लाल लाडिली विलोकिबेको,ललित लुनाईअंगअंगमेंअनेकहैं॥सोहतसुहागअनुरागभरे आननपै,भाग भरीभौंहवीच कोटि मदनेकहैं॥ एहोनटनागर तिहारी सौंहसाँची कहौं सारेभुवमंडलविधाता रचिएकहैं ॥ प्यारीके नयनअनियारे कारे कजरारे, मृग मीन कंज खंजहू तेवितरेकहैं ॥ १८ ॥ आज वनमालीएकअद्भुतउचारीबात, कछूना विचारीपैउजारीबागयारीकी ॥ जाहरजनाई वनआईनिजअंगवाँन, अधिकरिझाई लाजआईना हकारीकी ॥नटनागरसागरसमीपआयबैठेतोऊ, निपटनिशंक वातेसुनी विभचारीकी ॥

सवनतेप्यारीप्रियाप्रियाहूतेप्यारेप्राण, प्राणहूतेप्यारीमोंकोप्रीतिप्राणप्यारीकी ॥१९॥ एकछिनयाम समयामदिनमानसम, दिननिशिमानमाससंवत्सरचावैनाँ ॥ सोहीखाँनपाँनन्हानगाँनमोंअग्यानसोंगो, तेरोहियध्यानछाँडआँन दिशिजावैनाँ ॥ पारसीपुराणरूसितारआदि साहित्यलों, चित्तकोरचाऊँ तोपैयाकेमनभावैनाँ ॥ हाहा नटनागर तिहारीसौंह साँचीकहौं, रावरोवियोगमोंकोश्रीधरादिखावैनाँ२०

सवैया—इततेउततेनितबाहुकेद्वारपै, प्रेमतुरंग कोटूम्योंकरै॥ नहिंऔर त्रियानकीओरलखै, झिरकेतोऊदाँवनझूम्योंकरै ॥ छिनदेखेविनानटनागरको, चितवासअकाशनघूम्योंकरै ॥ वह प्यारीकेकंठविलूम्योंकरै, मुंहचूम्योंकरैत्योंहीझूम्योंकरै ॥ २१ ॥

कवित्त—सागरस्वरूपको उजागरलख्योंमैंआज नटनागरनागरकोभूमें ज्योंकरेसमां ॥ श्रवणसुनीहैं सतीसरस्वतीपारवती, सचीहू विरंचिपचीहोयनहु-

ईरमां ॥ यक्षीनगीपन्नगीरुगांधरवीकैसेकहौं, हारीम
तिहेरहेरजकसीरहीजमां ॥ कीरतिकुमारिजाकेस-
मताविचारीनारी, रतीकरतीकोरूपातिलसीतिलो-
त्तमां ॥ २२ ॥ वृजकेसरोवरमेंपैजवृजनंदनकी ॥
वृक्षगुरुभोगनके तटपरवृंदहैं ॥ आनंदअद्भुतनट-
नागरमैंकहाकहूं, रचनांअनोखीऔरसुखसबफंद
हैं॥ आनँदकेकंदपिकचातककावेंदसब, याहीगुण-
गायबेकोवाणीमतिमंदहैं ॥ लहरतरंगजामेंसुखकी
अनेकउठैं, ब्रजबालाजलजमेंभ्रमरमुकुंदहैं ॥
॥ २३ ॥ बाहरविहरिबेकी बांनकोवहाईतोऊ, विर
हवियोगव्यथाविवशबढीरहै ॥ कानकुलकानकी
कहांनराखिबेकेकाज, करतकठोरकंठआहतो कढी
रहै ॥ पचिपचिपाचिपाचिमों नहींपढाऊंजोपै,
प्यारेकीप्रशंसायहैरसनापढीरहै ॥ नटनागरचतुर
चवावनचलावेज्योंज्यों, तेरीचाहमेरेचित्तचौगुनी
चढीरहै ॥ २४ ॥

सवैया—श्रीव्रजचंदगोविंदगुणी, जगवंदहैंजाहर फंदकोफंदहै ॥ कुंदकेहारहियेविहरैं, अरविंदसेलो यनरूपकोद्वंदहै ॥ मंदमहामुसुकानकरै, नटनागर नागरवृंदकोइंदहै ॥ छंदकोछंदहैंजिंदकोजिंदयो, नंदकोनंदअनंदकोकंदहै ॥२५॥ काहुपैशीशगुंथा वतहौ, नटनागरगूंथनकेसमरोरी ॥ काहुकेपांय लगावतजावक, काहुपैआपलगावैंवुंदोरी ॥ झांकत ताकतखेलखिलावत, वैठैंउठैंमतिछंदमेंवोरी ॥ काहेकोनंदकिशोरभयेतुम, क्योनभयेललानंद किशोरी ॥ २६ ॥

कवित्त—गुणगरुवाईमंदहाससुघराईलिये, चोप चतुराईनटनागरचुनाँकरैं ॥ कछुलरिकाईजामेंझूं ठकुटिलाईसंग, मृदुलमहानबातैंसुनिधूधुनाँकरैं ॥ भौंहकीवँकाईत्योझँकाईतिछैनैंननकी,प्रीतिकेपयो धिवीचचित्तकोसनाँकरैं ॥ देशपरदेशतथानगरउ जारवीच, तेरेगुणआठोंयाममोंमनगुनाँकरैं ॥२७

एकतोघटाअनूपनागरशिषीकीकूक, विद्युतलता केरूपमितछबिन्यारेहैं ॥अरुणदुपट्टाजासोंसुगंधल पट्टाउडै, मारुतझपट्टादेतगतिकोविसारेहै ॥औघट घटापैगिरैतिनकोथटासोहोत, चंद्रमुखऊपरलटायें नागकारेहैं ॥ आजयाअटापैदोऊकरमेंघटासेपैन कौनधौंछटासेहायकटाकरिडारेहैं ॥ २८ ॥ चंद्रके उजारेमतवारेनटनागरत्यों, शीतरुसुंगधमंदफंद वंदपारेरे ॥ तानकीतरंगसंगमधुरमृदंगधुनि, अंग अंगमदनउमंगबलधारेरे ॥ जारेउरकठिनमहारेयों प्रहारेहारे, प्यारेअबन्यारेव्हैके चित्तसोंविसारेरे ॥ रातवाअटापैदोऊकरमेंपटासेपैन, कौनधौंछटासे हायकटाकरिडारेरे ॥ २९ ॥

सवैया–साँवरेरंगरँगीसबरीकोऊ, ऊजरीनाँव्रज गाँबरेवारी ॥ साँवरोरूपबस्योदृगमें,सबसांवरोदीख तहैइकसारी ॥ उद्धवसांवरीरैनिचढी, नटनागर सोंकहाव्हैगईकारी ॥ सांवरेरंगरिझायलई, हमसांवरे

रंगकीरीझनहारी ॥ ३० ॥ ह्वैहैमहा उपहासहहा, गुरुलोगसभाविचकाविधिजैहैं ॥ जैहैंनहींतोवहीं कुलकांनरु, बांनपरेपरकोसिखदैहैं ॥ दैहैंलला नटनागरकेशिर, अंककलंककोशंकनपैहैं ॥ पैहैं कहासुनयाब्रजमें, दिनएकयाद्रेकमेंजाहरह्वैहैं ॥ ३१ ॥ चवावकेयेव्रजलोगलबार, हँसेसोहँसेसोहँ सेईहँसे ॥ फिरबाजेतेबाँसुरीनेहकेफंद, फँसेसुफँ सेसुफँसेईफँसे ॥ चषहीतेलखेनटनागरहीय, बसे सुबसेसुबसेईबसे ॥ कुलकानरुलोगकीलाजभटू, सोनसेसोनसेसोनसेईनसे ॥ ३२ ॥ तुमकाहेकोझोर करोइतनी, नहिंकाजहेलाजाहियेमढिबेकी ॥ नी तअनीतनमानतहूँ, दरकारनप्रीतविनापढिबेकी ॥ वदनामिकेसिंधुमेंबूडचुकी, नटनागरकौंनकहे कढिबेकी ॥ डाकनवारोचव्योशिरपै, जवलाजक हाखरकेचढिबेकी ॥ ३३ ॥ भोराहिआएहोभागब- डे, अदभूतदशानटनागरवारी ॥ कुंकुमजायल

ग्योउरपैरु, ललाटलगीहैरीरेखनकारी ॥ आंखनला
लरुलागेनखक्षत, आंगीकीटूटगईकसनारी ॥ पें-
चखुलेजमुहातचले, यहभांतिकहातुमकुंजबि-
हारी ॥ ३४ ॥

कवित्त–प्रातअलसातगातआलससुनींदेआत, झू
मतझुकातबातपियेमनुहालाके ॥पेंचफहरातशीश
जावकलखातभाल,पीतपटलुटेसँगजागेब्रजबालाके
काहेकोछिपातइतनींकहँमजानीजात, चिन्हउपटा
तउरविनागुणमालाके॥नटनागरठौरठौरदेखिएतन
कऔर,ललीमुखदागज्यूंहीदागमुखलालाके॥३५॥
कांनतकींचुरीनपैचुरीनकेफंदरचे, वेंणीसीअलकनैं
नमीनगिरधारीके॥ हिर्नमनकेसपासबागरविथुररही
अँगियारीभरेपैअनारीराधाप्यारीके ॥ भौंहधनुचक्र
नथचीताकटिनैनबाज,नरकोईलाजकेसोकाजहरे
नारीके॥नटनागरकाननअधीरकियेबाढिचले, यो-
बनकेराजसाजमदनशिकारीके ॥ ३६ ॥

सवैया–कीजैसवैनटनागरउद्धम, तोसेअन्याईकोकौनपतीजै ॥ तीजेसुनीजवधूरवाप्रीति, कछू विभचारकोमारगलीजै ॥ लीजैसवैसुननेहकीरीति, सुगोकुलमेंपगफूंककेदीजै ॥दीजैगँवाययूंहायवलायलों, क्योंअशनाहकोजाहरकीजै ॥ ३७ ॥ नहीं सुतमातपिताअपनेघर, नेहमेंभूलगईसोगई ॥ व्रजमेंयहटेरकह्योअवते, कुलकानकोसीखदईसो दई ॥ नटनागरयाअपलोकाकिगांठिमें, शीशपै तोकलईसोलई ॥ सवगाँवकेवावरेनामधरो,हम श्यामसनेहीभईसोभई ॥ ३८ ॥ नटनागरवालस खीकोकह्यो, अरीबांसुरील्यावरीमैंनाहिंल्यावों आवरीआवकाकामहैजू, तुमवांहीरहोकितोगारी सुनावों ॥ नहरीउतहीभलठाढीरहो,इतआवोतोतोकहचंद्रवतावों ॥ योंकहिकेहरिहाथछुयो, भजि आहरेऊहरेमैंनाहिंआवों ॥ ३९ ॥ नटनागरआये अहातथीराधे,हियेउमडीलाखिकामकला ॥ इतटेर

लियेकहियाविधिसों, बडभागहमारेसोआएचला ॥ अबहाहाकरौंतवपाँयपरौं, इहैमानियेतौसबकैंहैंभ लाअहोयादहबीचगिरोहैछला,सोनिकारिदेहौनँदजू केलला ॥ ४० ॥ हमजातगँवाइअजातभई, कुल कानतेआंनलजैतोलजो ॥ हमशंकतजीपि- तुमातहुकी,मोहिंनाथहूत्रासतजैतोतजो ॥ नटनाग रकीनगलीतजिहूं,गुरुलोककेवाकगजैतोगजो॥व्रज मंडलमेंबदनामीकोढोल,निशंकव्हैआजबजैतोबजो ॥ ४१ ॥

कवित्त—त्रासिबो सदाई नटनागरगुरूलोगनते, कैसेहू विलोकेहोतलोकलाजनसिबो ॥ कसिमन इंद्रिनविलसिबोनहोतकछू, फैललखिकान्हरकेनेह हूमेफँसिबो ॥ हुलसिविचारैयामेंहोतहैचवावदे- खो,सहबोपरैहैजबगुरूजनहँसिबो ॥ काजरकेगेह माँझबासिबोबिकटऐसो, निपटनिठुरतैसोयाव्रजमें बसिबो ॥ ४२ ॥ दाउकीबरसगाँठआजवाज

बाजैंनेक,नौतीवृषभानुललीबैठेपीसँवारेके ॥ ताही कोजिवांयकैउठायसमुझायसखी, लैगईदुतियभौंन भीतर पिछारेके ॥ नूपुरघमंककरघूंगुरझमंक, नट नागरठुमक पदरमकअखारेके ॥कारेनंदवारेकोसि धारेजीतवेकेकाज,बाजतनगारेमनुपंचशरवारेके ॥ ॥ ४३ ॥

सवैया—यमुना तटपै नटनागर जू, बँसुरी वटु पासहमेशरहाकरै ॥ वामुगधाकुलवानकहाकरै, नै-नकेसैनकेबाणवहाकरै ॥ घालिहिंडोरामहाकरफै ल, चढायवेसंगवात्रीतेफहाकरै ॥ ज्योंज्योंगहाकरैटे कविहारी,त्योंनारीअनारीतेहारीहाहाकरै ॥ ४४ ॥

कवित्त—यमुनाकेसंगनमेंकुंजकेविहंगनमें,वृंदा-वनवृंदनमेंअंगएकह्वैरह्यो ॥ मधुवनपुंजनमेंमधुक रगुंजनमें,मुग्धनकेमनमेंअनोपओपदैरह्यो ॥ नट नागरअंगनमेंभवनउमंगनमें, रंगसवरंगनमेंरंगरूप लैरह्यो ॥ तीजकीतरंगनमेंनवलाकेअंगनमें, सोस-

नीसुरंगनमोंइयाँमरंगव्हैरह्यो ॥ ४५ ॥ हारउरडार वारसुंदरसँवारकर,ग्रारचक्रजैसीनथथारमेंपरीरही। लकुटीमुकटपटपाटकोझटकपरो,कुंडलकटकआँखआँखतेअरीरही ॥ सुघरसँवारीसारीडारदी बिहारीदेख,डरीनाँपरीनाँचौंकचकितखरीरही ॥ नागर घरनदेखिघरनिबिसरिगए, अधरधरनतेउधरनधरी रही ॥ ४६ ॥

सवैया—हाअबकैसीकरूंसुनबीर, सुवामृदुहाँस हियेधँसगी ॥ अबयाव्रजमेंकुलवानकहावत, तेसबरीलखिकैहँसगी ॥ ननदीढिगआयनचायकैनैन,कछूकहवेनभ्रुवैंकसगी॥बचगीसबमेंविपरीतकथा,नट नागरफंदनमेंफँसगी ॥ ४७ ॥ महासुक्षमप्रीतिको मारगहै,कोउजानैकहाअनुरागेनहीं ॥ उनहीकोविचारियेयाविधिसों, मनोंसोवतनींदसोंजागेनहीं ॥ नटनागररीतिनजाँनतहौ,विरहानलदाहसोंदागेनहीं॥ तिनकोजगजीवनजानोवृथा,परप्रेमपयोधिमेंपागेनहीं ॥ ४८ ॥

कवित्त--चषयेचहतचाहमित्रकोविचित्रचित्र,पूर-णनहोतश्रोत्रवाकीसुनवातते ॥घ्राणचहैनासिकासु वाकेअंगरागहूको,त्युहींचहैरसनाउचारगुणगाथते। चाहतहैपाँवसुअटनउतआठोंयाम, त्योंहीत्वचाचाहतहैस्पर्शप्यारेगातते ॥ नागरदरशकछुपरशभ-येनहाय,विवशगयोहैमनमेरोमेरेहाथते ॥ ४९ ॥

दोहा—मोंकोकछुसूझतनहीं,तूकाबूझतवाल ॥ इनआंखिनमेंछ्वैरह्यो,कारोपीरोलाल ॥ ५० ॥

कवित्त—पूछेनटनागरकादेखोमैंचारित्रऐसो, मानोगिरिभूषणसोमेरेउरछ्वैरह्यो॥वेरसँझलौकीवीचनाहिनपिछानपरो, किधौंमृगराजवृजराजरूपज्वैरह्यो। पीतघनश्यामयुतसुरँगउठायेकछु, विद्युतलतासोयालताकेवीचख्वैगयो ॥ केहरियाहरिहोनजानौंकियारकेतकीमें,मेरीदोउआँखनमेंकारोपीरोह्वैरह्यो ५१ कारेविनअंजनहीखंजनतुराकेगंज,कंजनकुरंगमीन भंजनसँवारेक्यों॥ कचकुचकंमर पन्नागिचककेहरी

सी,जापैकेहिकाजआजअंगरागपारेक्यों ॥ सुघराईसागरसुनैहैनटनागरको, सहजशृँगाररीझिउद्यमये धारेक्यों ॥ रूपकेबनाइवेको रूपकेअभूषणते,गोरे गोरेपाँयकारेकारेकरडारेक्यों ॥५२॥ रहैंदाहैंऔरै घातकहैंदानऐकोबात,रहैंदातुसाँदेनालकछूनाकहैंदाहैं ॥ औदाहैंहमेशानितजैंदाहैंउसेहीगली, ललीवृषभानुदीगुलामहुवारेदाहैं ॥ उपमाकहेंनानटनागरवोनंदनँदा,तातेशशिअंकबीचभौमसरमेंदाहैं ॥ निचलारहैंदाकरहैंदाससकैंदावह,बैदालखितैदासुधिभूलभूजैंदाहैं ॥ ५३ ॥

सवैया—मारनमानतमेरोमतो,सुमनीमनमेंअलिहैमतिमंद ॥ सिखावनसासरेहुकीसुनीन,सुनीमुरलीज्योंबजीव्रजचंद ॥ दिनादुइबीचादिखायगीसो, नटनागरकेबाढिहैछलछंद ॥ डरैगीखरेनटरेगीकबु, तूपरैगीजरूरमुकुंदकेफंद ॥ ५४ ॥ आजगईनटनागरजू,जहाँकीरतरानीरहीपरवीनें॥देखीजहाँवृष-

भानुसुता,गजगामिनिकेहरिसीकटिखीनें ॥ खोज थकीसवरेजगमें,उपमाहगआननकीहैनवीनें ॥ द्वेद लकोअरविंदविराजतु,पूरणचंद्रकोआसनकीनें ९५

कवित्त–जादिनकढोहोमेरीखोरहूकेपोरआगे,तादिनगडोहोमेरेमनउरदीठमें ॥ ताहीछिनलोकलाज ऊपरपरीहैगाज,गुर्जनसमाजआजसहोंशिरधीठमें॥ नागरतादेखिनटगारभईहूंलटू,भटूमैंपठायेप्राणपाँचहूवसीठमें ॥ नीठनीठसबहीकोपीठदैनिहारचो करूँ,वोरिगयोढीठहायमटकेमजीठमें ॥ ९६ ॥ जादिनलखेहैंयमुनाकेबाँकेकूलनमें, फूलनकेफाग शोभानिपटनवीनीहै ॥ तादिनतेछबिकीतरंगबढी मेरेअंग,कोटिकअनंगहूतेरूपगतिखीनीहै ॥नटनागरसागरस्वरूपकोउजागरहै, हायमेरेनेत्रनकीउपमासुछीनीहै ॥ मेरेनैनबानसीथमृत्युलोकहीकेबीच,रूपविधिरावरेनेदेवगतिदीनीहै॥९७॥गोकुलकी गैलमेंगोपालग्वालगोधनमें, गोरजलपेटेलेखेऐसी

गतिकीनीहै ॥ चौंकिचौंकिचतुरचवायनचलाव
तहै,रहीचुपचापचोपचित्तमतिचीनीहै ॥ हाहाक
रहारीनटनागरविहारीतैंहू, उपमाविचारीजेबहुतग
तिझीनीहै ॥ मेरेनैनबानसीथेमृत्युलोकहीकेबीच,
रूपविधिरावरेनेदेवगतिदीनीहै ॥ ५८ ॥ पंकयोक
लंककोतोलाग्योहैनिशंकअंक, शंकतजिसारीप्या
रीहियनाहहरतू ॥सारेवृजवासीकेबुराईकारिवेकीबा
नि,काननकैरंगीअबगतमगहरत ॥ रूपगूणसागर
निहारनटनागरको, बैरिनकेबोलसुनिनेकनलहर
तू ॥ यावृजकेलोगनबुराईतोऊढाईशीश, बिहँस
विहारीसंगबावरीविहरतू ॥ ५९ ॥
सवैया—देहौंसबैगृहकाजपैचित्त, रुवित्तवटोरनमेंसु
खपैहों॥पैहोंगुरूजनकेसुखगेलमें,गैलमेंकुंजकेभूलि
नजैहों॥जैहोंसदायमुनाजलको, थलकोगउछाँडिभ
लेघरऐहों॥ ऐहोंनहींनटनागरभीनते,पानतेपानन
पाननदैहों ॥ ६० ॥

कवित्त—भोरउठभौंनतेगयोहैवृषभानुवीर,लखेवर-
जोरचषविलखविहालभो ॥ तादिनतेखाँनपाँनगाँ
नमुरलीकोगयो, हालसबभूलमनवाकेनेहजालभो
गोधनगोपालग्वालगोकुलगलीकेगैल,भूलयमुनाके
कूलमहामोहतालभो ॥ अंजनाविनाहूमनरंजनटना-
गरजू,नैनकंजखंजनसेनिरखिनिहालभो ॥ ६१ ॥
आजसुकुमारीमैंनिहारीवृषभानुसुता, नारीकोवि-
चारीनीकीशोभाकेअगारते ॥ सुरीअरुकिन्नरीपरी
हूविलखायपरी, नगीकीभगीहैचाहरूपगुणसारते ॥
नटनागरनैननउजागरदिखायदेहौं, चलीहातसात-
कविहायनिजवारते ॥ वसनवयारतेविहालहीन
जानीगई,वाजूवंदहारतेयाबारनकेभारते ॥ ६२ ॥
प्रीतमविहारीप्यारीप्रेक्षमेंपरोक्षदोउ, प्रीतिनहिंजा
हरउजागरछयेछये ॥ चित्तचिकनातनलखात
नविख्यातनेह, दोउदोउवारेफिरैंहितमेंठयेठये ॥
नटनागरनागरीकीऐसीरीतिआपसमें, सारेव्रजवा

सिनतेरहतनयेनये ॥ दोउनकीदोउओरदेह पैनदेखपरै, नैननमेंदेखनतेनेहकेभयेभये ॥ ॥ ६३ ॥ एरेनँदवारेकारेनिपटनिरंकुशहै, कुटिल कुरीतिऐसेछन्दसीख्योकोसोंरे ॥ नेहकोननेमनी केजानतहैन्यायकहों, गोधनगोपालतथादेवद्विजसो सोंरे ॥ प्यारेप्रेमपंथकोतैन्यारेव्हैनिहाऱ्योनाहिं, एरेनटनागरपुकारकहोंतोसोंरे ॥ नीतजोपढैतो वामेहोतहैप्रतीतरीत, प्रीतजोकरैतोवाकीरीतपढ-मोंसोंरे ॥ ६४ ॥

सवैया—निशिवासरप्रेमको नेमलिए, जियराखर हीपियकीबातियाँते॥ताछिनसुंदरसोनभए,पियआ-गमजानिलियोपातियाँते॥ नटनागरतेअँगनाअँगना माहि, दौरमिलीविरहाघतियाँते ॥ कंठतेऔरनबा तकढी;सुलगायरहीछतियाँछतियाँते ॥ ६५ ॥

कवित्त—चंद्रअरविंदरमामंदलगेजाकेढिग, वाँ-णीपछतानीदेखजाकीबुधवारीपै ॥रुद्राणीअरधअं-

गउपमांवनैनआछी, त्योंहीशचीशोभतीनगढपत्नी कारीपै ॥नटनागररतिहूकीसूरतदिखातनाहीं,वोहू पतिहीनखीनमहादुखभारीपै ॥नागसुरनरीनारीलो यननिहारीजेती, सारी वारडारीन्यारी कीरतकुम रीपै ॥६६॥ मैंतोहितमातीअनुरागसोंअथातीरवि, जानीनहिंजातीरातिसाँझकीफ़ज़रकी॥ नीठपियपा येदौरिछातीसोंलगायलाय, चंद्रमुखप्यारेपैचकोरि ज्योंनज़रकी ॥ नटनागरमेरेभौंनछाएहैंउछाहयुत, औरशोभाहोगईहैकलतेअजरकी ॥ एरेघरियारी तूतोविनामौतमारीहाय, वज्रकीसीलागीमेरेमोंगरी गज़रकी ॥ ६७ ॥

सवैया—नितजायोकरोयमुनातटको, तथागोध नसंगसिधायोकरो ॥बँसुरीवटपासविलासकरो,बँसु रीविचगाँनसुनायोकरो ॥नटनागरजाविधिव्योंतव- नै, सुधनेकगरीवकीलायोकरो ॥ चितचाह्योकरोम- नभायोकरो,छिपआयोकरोमिलजायोकरो ॥६८॥

इतगोधनसंगसखामिलकै, अपनीयहखोरहूजैवोक
रोमिलबोनबनैनटनागरजू,तोउबाँसुरीमेंकछुगैवोक
रो॥ब्रजकेविचमारेलबारनकी, जोकहैंकछुतोसुनलै
वोकरो॥सुखयादुखहानिरुलाभहमैं,अपनीतोजरा-
लिखिदैवोकरो६९सोचतहूंमैंखडीकबकीअब,हाय
मैंजायकहाकहिहूंघर ॥यादुखदेहदशाबिसरी,अरु-
आवतबारहिबारहियोभर । लाजजहाजडबोयदई,
नटनागरनेकनिहारतहीपर, मंदहँसीविचफंदसीपा
रिकै,इंदुसोंमोहिंगोविंदगयोकर ॥७०॥ आजसखी
मैंलखीनिजनैनन,ज्योंनलखीरुसुनीजगरीती ॥ ने-
कउछाहसुने नटनागर,होतसँकोचगुणैगुणभीती ॥
नेकउमंगउठैउरअंतर,होतमहामिलिबोदुखजीती॥
योबनऔशिशुताविचबालके, प्रीतिमोंवैररुवैरमों
प्रीती ॥ ७१ ॥

कवित्त–आईदौरदूरतेतिहारेदिखलावेकाज, दे-
खतवनेगीनाहिंऐसीछबिवारीते ॥कारेकारेबादरक-
ढेहैंत्रिकुटाचलसे,विद्युतलताकेहैंपताकेधारभारी
ते॥देखनटनागरकीसौंहजोकहूँहूँतोसों,पिकरवमो-
रशोरघोरघटाकारीते ॥ यमुनाहैन्यारीजाकेदेखत-
टभारीआली,आजकीछटारीचढनिरखअटारीते ॥
॥७२॥श्यामश्यामबादरयेआवतइतैकोअब, धूरर
हीपूरसोईनेकनानिहारीतैं॥विद्युतको जोरजाकेसंग
शोरमोरनको,चातकरुकोकिलापुकाररहीधारीतैं।
सौंहनटनागरकीऔरहीछबीहैंआज, गरजपरतबूं
द उठीदोरआरीतैं ॥ मैंतोगईवारीऐसीनांहिनिनिहा
रीवीर,आजकीछटारीलखिचढ़िकैअटारीतैं ॥७३॥

सवैया–वयसंधिकोजोरभयोतनमें, सबसौतन
केउरसालठयो ॥ नटनागरलालनिहालभयो,सुर
नागरिकोलखिगर्वगयो ॥ मुखचंद्रकोपेखिअनंदगँ-

वायके,इंदुप्रकाशतेमंदभयो ॥व्रजराजकेजीतवेका-
जमनों,रतिराजनयोइकशस्त्रलयो ॥ ७४ ॥
कवित्त—छलसोछबीलीआजछैलअविलोकन
कों,छराहूउतारधरेपायरघसनते ॥ सखिनकेसंगमें
कुरंगनैनीपैनीमति,दूररहीठाढीचाहचातुरफँसनते
॥ नैननटनागरकेऔंचकापरेहैंआय,हायकहिबैठग-
ईगुर्जनत्रसनते ॥बत्तीसोंदशनतेयोंरसनाकोदाबिर-
ही,रसनाकोदाबिरहीपल्लवदशनते७५ साँकरीगली
मेंआजललीव्रषभानुजूकी,जातयमुनाजलकोशो-
भाकेलसनते ॥ ताहीगैलछैलनटनागरजूआइगए,
हँसनदुहूँकोभयोभृकुटीकसनते ॥ नंदनिजगोधन
मेंताहिछिनदेखिपरे,छुकेनिजवासदोउमानोभैअस-
नते ॥ बत्तीसोंदशनतेयोंरसनाकोदाबिरही,रसना
कोदाबिरहीपल्लवदशनते ॥ ७६ ॥ नायनत्तवायकै
गुसायनकेपाँयझावै, उझाकिउझाकिउठैवाकरलस
नते॥ताहीछिनसखीलायताकरुपोशाकधरी, ठाढी

है शृँगारसाजेसंहजेहसनते ॥ नेहीनटनागरअटारी पैचढ्योछिपाय,छाँहलखिनाहकोलुकानीत्योंबसन ते ॥ बत्तीसोंदशन० ॥ ७७ ॥ लोयनातिहारेआ- नउपमानधारैआज,मानोद्वैसिवारबीचकंजपत्रसक रे ॥ कैधौंमकरध्वजबनायरूपमीनिहाको,नटनाग रपाटजालवाहनद्वैपकरे॥ कैधौंरतिराजआजबनि- कैशिकारीमीर,खंजनद्वैडारेपिंजराकेबीचअकरे ॥ कारेघुँघुवारेबारबीचमतवारेनैन,मानौउनमत्तद्वैजँ- जीरनसोंजकरे ॥ ७८ ॥

सवैया--जानेनआजलौंऐसेबिषादददा, द्वैकदिना तेकितेवढचाले ॥ मानतकैसेभयेबरजोर,मतंगये मैनकेहैंमतवाले ॥ सोहैंललानटनागरकी,विषरूप वियोगकेहौदविशाले॥काहेप्रतीतकरीइनकी, इननै ननहायघनेंघरघाले ॥ ७९ ॥

कवित्त--देखीनटनागरअनीतरीतआँखिनकी, अंगसबहीतेमंजुअतिवरजोरहै ॥ मृदुलमहाहैगति

सुक्षमलखातनाहीं, रदनकरीज्योंजाकोअभिप्राय ओरहै ॥ढीलीढीलीभौंहतररहतलजीलीहहा,तीखी तीखीदेखियेअनोखीसीखीदोरहै । कारीकजरारी ढाँपीरहतविचारीतोऊ, हेतुसुकुमारताकोकारज-कठोरहै ॥ ८० ॥

सवैया–हेवृषभानुललीहगएते, लडेतेकियेकहा केलकीफूली ॥तेरेयासेजविनोदमेंबावरी,मेरेलला कीकलासबभूली॥वानटनागरकेचरणोंतल, ताछि-नऊडिकितैगइधूली॥ज्योंपरैदूरित्योंपीछोचितै, सु तिरछेसेनैनसनेहकीशूली ॥ ८१ ॥ जबतेयहबान कुबानपरी,तबतेकुलकानदईसबछ्वै ॥ नितमित्रके रूपनिहारिबेको, पलतेपलनेकगईनहिंछ्वै॥समुझाय थकीनटनागरजू,विनऔसरहीउमहेचलच्वै ॥ चष रूपखिलोनेंकेधारिवेको,हठरूपभयेमनुबालकद्वै ॥ ॥ ८२ ॥ सुनप्यारीसुजानतिहारेहगांनमें, अंजन काहेकोसारिवोहै॥उलटावनचंचलखंजनसे,यहभौं-

हत्रिवंकनयारिवोहै ॥ सवहावरुभावलियेसँगही,ति रछीसीचितौंनक्योंधारिवोहै ॥ नटनागरकेनकढेन टसाल,एसूधोनिहारिवोमारिवोहै ॥ ८३ ॥

कुंडलिया—आँखेंजादिनतेलगीं, जगीविरहकी ज्वाल॥अरीठगोरीतैंठगे,नटनागरनँदलाल॥न०छै लपनसवहीभूले ॥ कृशितभयेतनताप,फिरतथेफू लेफूले॥अवकीदोऊरहतनहींलगतीपलपाँखैं।मह्ा हलाहलगहरकहरकरिडारोआँखैं ॥ ८४ ॥

सवैया—उद्धमऐसोमच्यो नटनागर, श्रीवृष भानुसुताउमहीहै ॥ होरीहैहोरीहैहोरीकहै,सवझो रीगुलालहैढोरीगहीहै ॥ ओजसोआजसमाजसवै, गहिवोरतदौरतमौजमहीहै ॥ केशरहौजपैचोजभ री,वेमनोजकीफौजसीफैलरही है॥८५॥जितख्याल रच्योअदभूतसुन्यो,कछुजानीनहींमैंचलीगइवाग ॥ जवतत्रलखेनटनागरको, कहिऐसोकहांपैलग्योउर दाग॥सुनिमोहिंवचाकिसोंचाहनहीं,एलगीहैअनोखी

सीआँखनलाग ॥ गजिगाजपरोशिरमेरेभटू,सुलगो
यहफागकेशीशपैआग ॥ ८६ ॥

कवित्त–गावतगोपालग्वालबालवेजिभारमिल,डो
लतप्रलापमयबोलतकसनते।ढोलकसितारवीणाबाँ
सुरीबजावैंधावैं,गहिगोपसखावधूहोरीकेमिसनते ॥
निकटनटनागरनिहारतहीसूखीदेह, झिपीनिजछाँह
बीचबेवसनसनते ॥बत्तीसोंदशनतेयोंरसनाकोदावि
रही,रसनाकोदाबिरहीपल्लवदशनते॥८७ ॥झोरीभ
रिदोरीकेऊरोरीलैमचावैशोरबौरीसीफिरैहैगोरीकहै,
बैनजोरीके॥कोरीनारहेगीचोरीपीतहूविछोरीआज,
लोकलाजछोरीभोरीबोरीरंगधोरीके ॥ ठाढीनिजपो
रीयोंउचारातिहैथोरीथोरी, कोऊजायखोरीनँदराय
कीकहोरीके ॥नटनागरघोरीशारिद्युद्धहैवहोरीदेखो
होरीकेसमाजकढेकीरताकिशोरीके ॥ ८८ ॥

सवैया–प्रियप्रीतमपागेपरास्त्रियते, दिवरासोउडो
लतबागनमें ॥ ससुराअरुसासपुराणसुनै, नितपा-

चोहिंयादुखदागनमें॥ नटनागरएकरहीनँनदी,सो-
उनेहकहूँचितलागनमें॥दुखभागनमेंनिशिजागनमें
दिनकैसेकढोंयहफागनमें ॥ ८९ ॥ अतिकीन्होद-
गादुखदायनये, सु दिखावनफागकह्योजबरीझगी
मोंकोनवीनलखीनटनागर, आनवधूनकेधोखेहिधी
जगी॥ छलहीछलसोंछिपछाहनमेंढिगछूवतछैलकी
छाँहसीछीजगी ॥ गीजगीमींजगीनेकछुईफिर, भी-
जगीसीझगीहायपसीजगी ॥ ९० ॥

वियोगशृंगार ॥

कवित्त–विनतीइतीकयागरीवनकीबारबार, प्रीति
कीप्रतीतिबातैंसुनकेसुनायजा॥ नटनारसागरसने-
हकोनपागोनेरे, प्रेमकेपयोधिवीचन्हायकै न्हवाय
जा ॥ मेरीओरयाहीखोरनातोयामहल्लावीच, तेरी
मोंहनीमेवाँकेटेढवोलगायजा॥ नेकइतआयजाछि-
नेकइतछायजारे, दरश दिखायहायमरत जिया
यजा ॥ ९१ ॥

सवैया--सरमेंतैरवायकैबोरियेकै,गिरपैचढवायकै डारियेजू॥ कछुजानकेलेनकेनाहिंउपाय,तोसिंघग यंदबकारियेजू॥ अवप्राणतोकान्हमेंआनिरह्यो, जो उवारिवोहैतोउबारियेजू॥नटनागरऐंचकैधीठमहा हहाबंसीकीताननमारियेजू ॥ ९२ ॥
कवित्त-बाँसुरीसमानमेरीपाँसुरीहरेकबोलैं,उठतअ साध्यपीरमनोघावनेजाज्यों॥ हायनटनागरजूआह तोकढैहैनीठ, लोयनवहैहैदोउभारेजलसेजाज्यों ॥ मारेनैनबाणऐंचिऐंचिश्रवणांतजबै,तातेसछिद्रहते निकटथिरबेझाज्यों॥ रावरोवियोगआगजाकेखाय खायदाग,व्हैगयोकरेजामेरोचूनरीकेरेजाज्यों॥९३॥
जगकीनजाहरकीयशकीनजीकीजान,जनकीननट नागरजीह्ज्वाबजाकेहैं॥ पीरकीनपीरपरपीरकीन गनेंपीर,परतनधीरप्रेमपुंजपाशपाकेहैं॥छीनतनछा तीछेदछिछकेरहेनछानी,छिपतनछाँहअतिछाकछ विछाकेहैं ॥ मनकेनमारकेनमौतकेनमारेहारे,हारे

हियमारेहायमानसीव्यथाकेहैं ॥९४॥ कठिनमहा-
नखानवरछीबँदूकबाण, प्राणहूकीहानीसिंघवारण
वकारिवो॥जहरहलाहलकोपानहूकठिननाहिं, त्यों
हींनटनागरनाआगतनजारिवो ॥ त्योंहीजपयोगव्र
ततीरथअहारविन, करिकैअनेककष्टदेहहूकोगारि
वो ॥ एतेसवमेरेजानसुलभलखातसारे,कठिनमहा
हैप्रीतिरीतिप्रतिपारिवो ॥ ९५ ॥ अलीमृगमीनमो
रचातकीअहीचकोर, कंजरुकमोदचक्रवाकआदि
मेंगिने ॥ बदरेमुनीरवेनज़ीरसीरीखुशरूमें,सागरप्र
वीणज़लावूवनाजितेसुने ॥ सीरीफरहादतथायूसुफ
ज़ुलेक़ाजैसे, लैलेमज़नूंज्योंगुलिइतांसिसनेवने ॥नट
नागरप्रीतिकोजितावेयाहिलावजीह,प्रीतिकरिवेकी
रीतिजानतइतेजने ॥ ९६ ॥

सवैया—नटनागरनेहलग्योहैनयो,हमकाजउन्हैं
तरसावनोनाँ ॥ फिरयाव्रजवीचचवावचलै,तुछका
रजकोतनतावनोनाँ॥ तुमकोसुखदेखिहमेंसुखहै,गु

णनूतननेहकेगावनोनाँ॥इतआवनेतेदुखपावनोहै, इतआवनोनाँदुखपावनोनाँ॥ १७॥

कवित्त–पहिलेलगोहैलागआगसीनजानिपरी, भाग्यकीहैबातविनचाहनपगनकी ॥ मैंतोनटनागरउजागरनकीन्हीऐसी, परीशीशआययहैदागनदगनकी ॥गुरुजनकीमानीनाहिंछानीहीछिपाय राखूँ,हाहामैंनजानीऐसीमोशिरखगनकी ॥ मगनभयोहैमनठगनालिखीनहाय, अगनअनोखीपेखीचितकेलगनकी ॥ १८॥

सवैया–कैसेकहूंनटनागरजू,अवयाश्रमहायजरोंकिनजीकी ॥मोउरबीचदरारादिखात,सोयाकोसियेकासुईदरजीकी॥ कहाजानेधनाढ्यकँगालनकीगति,ह्वैगरजीसोलहैगरजीकी॥ वेमरजीकोव्यथासिरजानहिं,जानतहैंगरजीगरजीकी॥१९॥आलमशेखसुजानघनानँदजोजगबीचयाजालअरूझो॥रंकरुरावकोभावनहींयह,रंगरँगोजिन्हैऔरनसूझो॥वाअल

वेलीसीलैलीनिहारिकै,पूतपठानकोजाहरजूझो ॥
जानअजानभएनटनागर,प्रेमकोनेमप्रवीणसेबूझो॥
॥ १००॥जितनेमुखबैनकैढंरसचूवत,तेसबहीचुनि
वोईकरै ॥ धरिध्यानहियेनटनागरसो,गुणतेरेललो
गुणिवोईकरै ॥ निशद्योसजहाँतहाँशीशसदाधरै,धी
रजनाधरिवोईकरै ॥ फिरिज्वावनदेवोहमैतोकहा
कछुकैह्योकरोसुनिवोईकरै ॥१०१॥ पहलेमैंकह्यो
समुझायतुह्यैं,लडवावरेव्हैकरेएकनमानी ॥ ऐसेको
देतवजायकेढोल,करैहैसवीपरराखतछानी ॥ और
कहाकहियेनटनार,जानतनाटुकलाभरुहानी॥ हा
यकहाअबरोवतहौ, अहोप्रीतिकरीकछुरीतिनजा
नी ॥ १०२ ॥ यहैप्रेमकीरीतिप्रतीतिसुनी,
परपाकतसोफिरपाँकेनहीं ॥ कहियेकहाँजायपु,
कारकरों,गुरुलोगसभाविचआँकेनहीं ॥ मम
भालमेंहाललिख्योविधियों,कोउयाब्रजवोलतसाँके
नहीं॥ नटनागरहाअबऐसीकरी, दुसरायकैद्वारक

झाँकेनहीं ॥ १०३ ॥ मनकोमिलवोजवहीते भयो,भयोतीखेकटाक्षनकोघलिबो ॥ सुखसागरजा निसनेहकियो,नटनागरआगविनाजलिबो ॥ तन कोमिलिबोसुरह्योअतिदूर, रह्योकुलमारगकोचलि बो॥ रहोवैननकोमिलवोनबनै,नबनैअबनैननकोमिं लिबो॥४॥नैननसेनचलीनमिली,तोउजाहरदेखपरी जबजागी ॥गोकुलवेदगुरूजनकी,कुलरीतप्रतीतभ ईसबदागी ॥ वानटनागरकीछबितोयसों,ज्योंछिर- कोतोरहैकहुँपागी॥ हायनऔरउपायकहूँ,अबमोंउ रलायवियोगकीलागी ॥ ५ ॥ जितहीतितेजबही तबहीं,इतआयछिनेकतोछायोकरो ॥ नटनागर कागदकैसेलिखूँ,वहनागरिकेमनभायोकरो ॥ कुल कानरुलोगकीलाजनसायकै, प्रेमकीबेलिबढायोक रो ॥विरहागतियाकीकथाहमरेढिग, आयललासुनि जायोकरो॥६॥निजप्राणकीघातकोपापविचारिकै, नेकहुनाविषखायेबनै ॥ कुललोकरुवेदमर्यादकीकै

द,वड़ीगृहवीचरहायेबनै।।नटनागरलोगचवावनसों धरफूँककैपाँयधरायेबनै।।दृगबाणअनीकोसुजानहि ये,जिनकेलगीजासोंकहायेबनै ॥ ॥ ७

कवित्त—पहलेतोप्रीतिकेपयोधिमेंपगायदीन्ही,अब जोचुरायेंनैनहाययोंदहाकरो ।।तापैजोसुनावतहोरू खेमुखऐसीबात,सुखजोचहोतोंनेकदुखहूसहाकरो।। याव्रजबुराईदेतेंदेरनकैरंगीदेखो,नीतियोंसुनावोनेह गैलकोगहाकरो।।हमकोनभाईनटनागरजगाईआप, प्यारेजोकहावोततोन्यारेनारहाकरो।। ८।।छैलमैंति हारीछविछाकसोंछकीहूंहाय, छलसोंनजान्योंजूछ लीसीरहिछानीमैं।पेखेहूप्रतीतकरप्राणनकोकीन्हेपे श,पूरेनामनोरथपरैहैजायपानीमैं ॥ दूवरीभईहैदेह रावरोदियोवियोग,नटनागरनागरानिहारकेविकानी मैं।।सबकीकहानीजीकोंनेकहूनमानीमित्र, मिलबो वनैगोनाहिंजानीयानजानीमैं।। ९।।कुलतैंकुटंबतैंक दंवतैंरुकुंजनतैं:कूलयमुनातैंहानिहारबेरकीनोतैं ॥

जगतैंरुजसतैंजगातैंजातपातहूतैं, जुलमीतैंजाहरही
मनछीनलीनोतैं॥भालमेंलिखोहीनटनागरभलीया
बुरी,हायदुखएकजोपैनेकहूनभीनोतैं ॥ बालरूपी
तालतैंनिकारमोहजालडार, सुखतेंहैकाललालहा
लदुखदीनोतैं॥१०॥ एरेदिलदारतोसोंकहतपुकार
हार,कछुनाबिचारध्वनिकाँननमेंनायदे॥जारदेरेवि
रहाकेबंधनविकटफंद, वृक्षयोवियोगजाकोजरतेंमि
टायदे॥मिलनटनागरतूअबतोउजागरह्वै, जैसोउर
बीचध्यानतैसोरागगायदे।काँननहमारेमेंकृशानुसी
बढीहैचाह,तेरेचंद्रआननतेताननसुनायदे११॥नट
नागरबाँचियोउजागरलिख्योहैपत्र, आजहूतेंनहजा
निछेहनछियोकरो॥याब्रजकेबावरेबुरेहैंबिजमारेलो
ग, तिनतेंछिपायजराखबरलियोकरो॥प्रीतरहीछाँ
नीजाकोअबलोनजानाकाहू,काननचवावनकेबाच
क्योंपियोकरो ॥परशभयेकोप्यारेबरषगयोहैबीत,
तरसबिचारजरादरशदियोकरो॥ १२ ॥हमतोवहा

ईजातपातयेविख्यातग्रातबोलतप्रभातरातनाहींक छुछानेमें ॥ आवनहमारोमनभावननहोतउत,महा परमारथहैछविसोंछकानेमें ॥नटनागरमानउपगार अतिजानजिय,नेकडरउतहैहमारेआनेजानेमें।बाण गहीनैननेहायनविचारीकछु, प्यारेकहाहानतेरेसू रतादिखानेमें॥१३॥ नटनागरपूछकेसुन्योहैबुद्धिसा गरते,कागदलिखेकोबाँचिकह्योजिनसाधते॥ आज लोंनसुन्योदख्योपोथीकेप्रबंधनमें, नाहिनपरेगोपार परेलिखओधते। निइचैनिहारकैउचारतहौंऐसीबात हँसकैसुनावतकहूँनकछुक्रोधते॥ बोधतेअबोधतेया मोदतेविरोधहूते, परिकैकह्योनकोऊप्रेमकेपयोधते ॥१४॥कुलऔकुटंवकेदरारेभारेभानुकर,वेदगुरुझा रखोदडारेसोनपाइयतु॥ सुघरसुधारजामेंलग्यविच नायदिये,जैसेरसग्रंथनमेंआगेआगेगाइयतु।रावरेअ नुग्रहकोमेंहवरसायोआप, एकोबीजऊग्योनाहिंभा ग्ययोंदिखाइयतु ॥हाहानटनागरउमेदफलफूलकी

थी,प्यारेप्रीतखेतमेंतोरेतनलखाइयतु १९ एरीमेरी बीरधरधीरसुनमेरीपीर, तीरजैसोलागतशरीरनीर कारेसों ॥ कारेकारेबादरयेन्यारेदुखदेनलागे,कटत करेजाकारीकोकिलपुकारेसों ॥ कारेनटनागरते न्यारेह्वैनिहारेदुख, प्यारेप्यारेप्राणकैसेरहतबिसारे सों ॥ नेकमुखलायबोकहूँनकितजायवोरी,हायमन सौंपदियोहाथनहमारेसों ॥ १६ ॥ भूँखप्यासहासरु विलासजेअवासनके, मित्तविनचित्तमहँकैसेमनभा तहैं ॥ रूरेजगबीचकेउमानसविरंचिरचे, मेरेकोउ आँखिनमेंनाहिंनसमातहैं ॥ नटनागरआगसीजरै हैउरआठोंयाम, घाँमलगैचाँदनीरुचंद्रविषदातहैं ॥ करतपरेखेहायप्राणअबशेषरहे, देखेविनप्यारेकेअ लेखेदिनजातहैं ॥११७॥

वियोगशृंगारमान सवैया—औरतातोहिकोनिं दतहै,सखिक्रोधितबामनमानैमनाईमैंनटनागरवंद तहूँ,धनरीधनतूवृषभानुकीजाई ॥ तेरेमनाइवेबीच

उनिंदित,सोचमेंक्योंपलकैंतोमिलाई ॥ कालकेला लनभूखेहुते,सुभलीकरीतैनेहहातोखवाई ॥११८॥

कवित्त—पहलेतोलालनकेउरलिपटाइबेको,फि रीछविछाकीतैंनराखीसुधदेहकी ॥ सारेब्रजबारेये विचारेसमुझायहारे, गुर्जनासिखाईतूनसीखीकछुगे हकी ॥ नटनागरउमगउछाहसोंबुलाईआज,हायन टवैठीवातकीनीतैंअछेहकी॥बीतिगईरैनरसरीतिग योमोहनको,प्रेमकीप्रतीतिगईनीतिनिजनेहकी १९

जाकेकाजमैंनेलोकलाजकोअकाजकीनी,सखीकिस माजकुलकारनवचोनहीं ॥ फेरगुरुवृद्धपुनिसासरे रुपीहरमें, सारेवृजमाँहिंऐसोकोहैसोखिचोनहीं ॥ हहानटनागरमैंसागरसनेहआने, आगरनिकारेगुण हियकापचोनहीं ॥ कोटिकप्रपंचकीन्हेकाहूकोनदी जैदोप,रंचसुखभालमेंविरंचहूरचोनहीं ॥ २० ॥

सागरसनेहगुणखाँननटनागरहैं, नागरीतैंतातेचित चोऱ्योक्योंहुलासको ॥ भोरहीतेभामिनीभुलाऊँ

तूनभूलैनेक, भाँवरीभरैहैवोविहारीरसरासको ॥
मानतजिमानमेरीवारीमेंनिहारनेक, प्रीतमबुलावे
मगलीजियेअवासको ॥ रजनीरहीनआधीवजनी
रहीहैबाकी, सजनीप्रकाशगयोरजनीप्रकाशको ॥
॥ २१ ॥ गौवनगुविंदग्वालगोकुलगलीकेगैल,
गावतहैंगोरीहोरीछैलगैलहासको ॥ गोपहूहथाय
नतेगयेनिजगेहकाज, त्रियासुखसाजकेसँवारेनि
जवासको ॥ कोकनदकोकशोकगोपनिगएविलो
कि, हर्षनटनागरहैनिश्चयविलासको ॥ वोरीदुख
तजनिजसजनीशृँगारसाज, सजनीप्रकाशभयोर
जनीप्रकाशको ॥ १२२ ॥ गोकुलकीकुलकीगोपा
लगोपीगोधनकीगारीकीनगारयोंगँवाईगैलगेहकी॥
दारुणदुसहदुखदीनताउठाईदेखो, दिलमेंबढ़ीहै
दाहदाधीछबिदेहकी ॥ मारुतमयंकमृगमदहूमहा
ननंद, लागतहैआगनैनहूतेऋतुमेहकी ॥ नटनागर
निरखीनालिखीसदग्रंथनमें,नाजुक निपटहै निहारो
रीतिनेहकी ॥ २३ ॥

वियोगशृंगारप्रवास-सवैया।

उद्धवकोपठये उतते,इतज्ञानसुनायकैक्योंउर जारो ॥ चेरीचुभीचितमोंहितसों,अवप्रीतकीरीतक रीप्रतिपारो ॥ नागरताइतनीनटनागर,याव्रजकेहि ततो मतधारो॥ थीतोबिकाऊनलेतबनी,अबपूछत क्योंतुममोलहभारो ॥ २४ ॥ वेदपुराणकुरान किताबन, औरहुग्रंथअनेकनसूझो ॥ जेजगमें सदवैद्यकहावत, जोनटनागरताहितेबूझो ॥ चातुरऔरगुणीजितने, कियप्रश्नसोईहियमाँझ अरूझो ॥ याकोउपायनपावतहैं, जगमित्रवि योगसोंरोगनदूजो॥ २५ ॥ काठकेबीचरहैघुनकीट ज्यों,हेमनरोगकहांतकरावैं ॥प्राणसथांनरहेनहिरा खेहु,दारुणशोककहाँतकरावैं।एविषियासुखदादुख दाभई,हायकुभोगकहाँतकरावैं ॥नेमलख्योनटना गरनेक,वियोगकोयोगकहाँतकरावैं॥ २६ ॥ येअँ खियांदुखियाहैंसदा, कबह्वैसुखियाछबिमित्रकीज्वै

हैं ॥ जानतहौंमैं असाढकेअंबुद,ज्योंउमडेहैंअघा येकैच्वैहैं ॥ मोउरभोहैअगारयोआगको, देखेबिना नटनागरख्वैहैं॥ प्यारेपरीहैवियोगकीराति,सुयाको प्रभातकहोकबह्वैहैं ॥ १२७ ॥

कवित्त--मोहनमिलायवेकोउद्यमउठायोबीर,मं दभाग्यमेरेतफुऱ्योनश्रमजानदे ॥ श्रवणसुनेतअ नुरागउठोमेरेउर,सोऊदुखधाऱ्योमैंकहूंसोनेककान दे॥प्यारेनटनागरकोध्यानतूबतायमोको, विनयवि चारमेरीशीघ्रप्राणदानदे॥ मिलबोरुबोलबोनिहार बोरह्योहैदूर,हहाउनपायनकीधूरनेकआनदे॥२८॥

सवैया--काननसोंनितबैंनसनैं, अरुनैननरूप निहारतहैं ॥ फिरआननसोंअतिसुंदरनामलै, आपसबीचपुकारतहैं ॥ अहोउद्धवकाहेप्रलापउ चारत,श्यामवहाँकोउधारतहैं ॥ नटनागरप्यारो हमारोहमैं,पलएकहुनाहिंविसारतहैं ॥ २९ ॥

कवित्त—बालमविदेशजानिबागनकेवृक्षनपै,बैर हीबढावतहैचातकबहूबहू ॥ रैनकोकरैहैरारिनीं दानिरवारिएते,राकापतिरागरंगसुरभीरहूरहू॥प्यारे नटनागरकेअंतरसमैंकोपाय, मोहिंकोसतावतहै विरहामहूमहू ॥ लाजकीनसायनबसायनकछूनता ते,कोकिलाकसायनपुकारतकहूकहू ॥३०॥ तक ततवीबजिततितहीकितावनको, नटनागरताके तर्कएकहूलखातनां ॥ नइतरउपायनाहिंनिश्चैसोइ लाजकोऊ,याकोजियजीवनतोजाहरजनातनां॥ अ श्वनीकुमारआदिधन्वंतरिवैद्यजैसे, कहांलुकमाँ नतुच्छकोऊयशपातनां ॥ शरदभयोहैदिलज रदभयोहैरंगगरदभयोहै, अंगदरददिखातनां ॥ ॥ ३१ ॥ शंभूकोपिनाकऔत्रिशूलजगदंबा जूको,वासवकोवज्रवडवागहूअनूपनाँ ॥ नटनागर चक्ररुषडाननकोशूलमहा,शेषफुफकारमारतंडता पओपनाँ ॥ भीमरुकिरीटीजूकेगाण्डिवगदागरिष्ट,

मुसलहलायुधकोआवतहैजूपनाँ ॥ गरुडझपेटपु
निमारुतीचपेटमहा, मित्रकोवियोगजैसोकालहूको
कोपनाँ ॥ ३२ ॥ विरहदुवारजाकेऔरनअधारक
छु,तीनोपुरधारनटनागरनधामहै ॥ जरतजनातना
हिंजनकोलखातनाहिं,विपत अमोघ ओघ शोक
आठों याम है ॥ रहत समाधि जाको अधिकै विषा
दहूते, विरह व्यथाके थाके जाके नहिं काम है ॥
आह नहिं होती तोकराह मर जाते केऊ, दर्दिन
के उर माँझ आह विसराम है ॥ ३३ ॥ एरे हो
चितेरे तोसों चित्रनाँ बनेगोभाई, नाहिन समक्ष
प्यारो बातहै दिगंतकी ॥ नटनागर चित्रकीन
तेरे पास साहित्य है, सोई सुन नीके मैं सुनाऊँ
बात तंतकी ॥ विरह चितेरा विश्वकर्माको
स्वरूपहोय, नवहीं अवस्था रंगभीत मेरे
चितकी ॥ ऐसोयोगसाधिकैसमाधिविचभयोथिर,
जापैलिखिगईहैछाबिवामेरोमितकी ॥३४॥उद्धवजी

लिखाइलायेज्ञानवैरागयोग, रोगसोंदिखातहमैंना हिकछुआसहै॥नेमजोकियोहैनटनागरउपासनाको व्रतनटरैगोदेखोजौलोंघटश्वासहै॥ कान्हरकहावैको नवाकोहमजानैंनाँहिं, कान्हरहमारोऐसोलिखैबडी हासहै ॥ कान्हरतिहारेतेहमारेकछुकामनाँहिं,का न्हरहमारोतोहमारेप्राणपासहै ॥ ३५ ॥ तुमजोब तावतहोनंदकेदुलारेवहां,येहूबातझूंठजिनकहोव्रज सारेमें॥वेहुकोउऔरह्वैहैंनाहिनपरेखोकछु, दूषणल गावत हौ हायप्राण प्यारेमें ॥नटनागर करत हमारे संग नृत्य नित्य, बाँसुरी बजावत है यमुनाँ किनारे में ॥ मोहन तुह्मारो तो तुह्मारे मथुरा के बीच, मोहन हमारो तो हमारे नैन तारे में ॥ ३६ ॥ एहो द्विज पाँय पर पूछतहों तोसों प्रश्न, मेरे भाग्य लिखी बातैं जाहर दिखायदे॥गणित निकार नेक करिये विचार हाहा, मित्रको संयोग सुधा कानन सुनायदे ॥ मेरे धाम बीच जैतो धनसों

धरूँगी आगे, केती अवधी है दुख दारुणकी गायदे ॥ कारो नँदवारो नटनागर भयोहै न्यारो, प्यारो मिलवेकी मोंको सुघरी बतायदे ॥ ३७ ॥ कोकिल कलापी कीर चातक कपोत आदि, कूकें सुनिहूकेंजाकीकाहेको सह्योकरूँ॥शीतलसुगंधमंद मंद गति मारुतसों, चंद्र अरु चंदनसों चित्तक्यों दह्यो करूँ ॥ शिक्षाजो सुनावै जाकी सुनै अरु गुनै कौन, गुण नटनागरके गिनकै गह्यो करूँ ॥ सुखदुखदोउमेंमैहोयकेविलोमबसे, मित्रजोमिलतो मैंनिंचितह्वैरह्योकरूँ॥३८स्वस्तिश्रीसज्जनपुरमहा शुभश्रेष्ठस्थान, उपमाअनेकजेतीप्यारेकोलिखूँमैं धाप॥यहाँकछुकुशलतिहारेतीनदर्शनते, चाहताति हारीमित्रअहोनिशिजपोंजाप॥नटनागरपूरणप्रसन्न तामिलोगेजब,महादुखएकजाकोमोउरबढोहैताप॥ हायदिनरातीमेरीछातीयोंजरीहीजातीकातीविरहा कीनेकपातीनाँपठाईआप॥३९॥राकापतिरागरंग

रहशअलीनसंग,मोंमनउमंगतजिपवैंशपरतजात॥ चोलनविहारवनबागनतडागनकेवारनकेभारधरपायनधरतजात॥ विरहपयोधजाकोबोधनकहाँलौंवारि,मोदिलथकोहैजामेंबूडतातिरतजात ॥ प्यारेनटनागरपयानपरदेशकीनों,तादिनतेंनैनभरभरकेढरतजात ॥ ४० ॥ हायमनमेरोमेरेवशकोनरह्योआली,करनासिखाऊतोहूअकरकरतजात ॥ चंद्रअरुचंदनकोशीतलबतावतपै परशदरशहूतेमोउरजरतजात॥ शीतलसुगधमंदमंदगतिमारुतयो,मीचको सिखायो पंच प्राणको हरत जात ॥ प्यारे नटनागर पयान परदेश कीनों, तादिनते नैनभर भरके ढरतजात ॥ ४१ ॥ नेहके सुनीर में शरीर मेरो आदि अंत, धीर न धरत हाय देखत गरत जात ॥ विरहदवारपैपतंगमेरेपाँचौंप्राण,अनुक्रम होतएकएकहीपरतजात ॥ लोयनकोमृगमीनकंजखंजदाखतहै, झूंठसबभाख्यौएतोझरनाँझरतजा

त ॥ प्यारे नटनागर पयान परदेश कीनों, ता दिनतेंनैनभर भरके ढरतजात ॥ ४२ ॥ बान तजि बावरी बयान सुन बैठ ढिग, हान हैनया मेंनेकक्यों हैतूगुमानमें ॥ योहै महानठानतुवना कछु गिनीहान, मानभय पंचवाण जानिहैं निदानमें ॥ नटनागरमानअपमानकोनहान हैजू, मैंहूंहयरानहूँगिलानतेरीआनमें ॥ गन्योहैअ यानजेवोनाहिनसयानहेरे, प्राणनपयानकीनोंप्यारे केप्रयानमें ॥ ४३ ॥ वामचषआजमेरेकांनसों कहैहैबात, त्योंहीभौंहवक्रभृकुटीनसुखदैनीसों ॥ वामकुचबांहत्योंहीकरतउछाहआज, होतहैरोमां चमेरीदेखोकटिपैनीसों ॥ प्यारेनटनागरपधारेंगे प्रदेशहूते,जौहरकरैंगेयुद्धपायरबैजनीसों ॥ सगुण सुहावनेसेहोतहैंसहेली देखो, पीठपैहियाकोहा रबिहरैहैबैनीसों ॥ ॥ ४४ ॥ श्रद्धाइननैन नमेंनाहिंनानिहारवेकी,त्योंहीश्रोत्रबीचआयमहाशू

न्यलायोहै ॥ नासिकारुरसनामेंभ्रमसोंपरयोहैभा
री,हाथपाँयडोलनमेंनाहींबलपायोहै॥ नटनागरदू
रवसिवेतेवसेएतेदूर, खानपानन्हाननींदआदिलेगि
नायोहै ॥ काहूनेनगायोहैबतायोहैनवेदकाहू,रावरे
वियोगकोमहानरोगछायोहै ॥ १४५ ॥ आलयमें
अपनेलखेहैंलालसपनेमें,बालहैविहालअतिचित्तमें
सकानीसी ॥ त्योंहींसुनसुयशसराहनासहेलिनसों,
स्वाँसैंभरिशशिकेकढेहैंप्रीतसानीसी ॥ नटनागर
धारेपतिमनक्रमवाचहूते, जाहरजनायजुपैबाहरबि
कानीसी ॥ शोकरससानीबिलपानीसीबिधीसीबोलै,
छीनीसीछकीसीहँसैडोलतदिवानीसी ॥ १४६ ॥
भारेदुखसारेयेबिलावेंगेपलेकमांझ, प्यारीकहिमों
कोप्यारकरकेपुकारेंगे ॥ न्यारेनारहेंगे वेनिहारेंगे
हमारेनैन, विपतावीयोगसारहिँसीहँसजारेंगे ॥
सगुनहमारेमन देतनटनागरके, आवनकीधावन
सुनाय हांकपारेंगे ॥ प्रीतम पियारेवेहमारे

।।णपाहरूहैं, प्रीतरीतजानपरदेशतेपधारेंगे ॥
१४७ ॥ बुद्धितेउठावतहैंउद्यमअनेकभाँति,ग्रीष
मकेओराज्योंनिहारोनासपायजात ॥जाहिपैनमान
तहैकरतउपायकेहू, शीतकेतुषारमेंज्योंअंबुजसमा
यजात ॥ नटनागरकहाँजायहायमैंसुनाऊँदुःख,ला
ग्योआधीरोगयोकरेजामेरोखायजात ॥ मनकेमनो
रथसोंमनहीमेंवृद्धिपाय, मनहीमेंफूलैंफलैंमनमेंबि
लायजात ॥ १४८ ॥ नीरदेमनोरथकोप्रेमबलिया
रीएक, जाकीगतिऐसीदेखोछिनमेंभईहैहाय ॥ मों
कोहुतीलालसानिहारवेकीफूलफल,भईनिरमूलजा
कोकैसेदुखकहूंगाय ॥ जाहीपरउद्धवजूआयकै
अन्याय बोलैं, कौनपै सुनाऊँसमझाऊँ कितकाहू
जाय ॥ नटनागर नेकहू निहारते तो जानतेजू,
रावरो कुपथ मृग जरहू ते गयो खाय ॥ १४९ ॥
छंद घनाक्षरी ॥ जन्म शिशुताई ह्वैकिशोरताई
पाई यहाँ, गिनेंका अनेक कीनीं ब्रजमें जितीफ

जीत ॥ वंसीवट यमुनाके नाहिन बखाने फैल, लोक कुल वेद कानि गोपिनकी गई बीत॥ ऊधो नट नागरजू पाती दे पठायेआप, जाहिपै लिख्यो है योग जानी नाहिं गई नीत ॥ कलहही पधारे जाको कालहू न वीते कछु, मोहन हमारे आज गावत तुह्मारे गीत ॥ १८० ॥ बार बार हार हार कहत पुकार तोसों, वृथा मत मारनेकधार धीर हारेतू ॥ सौंह नटनागरकी बोलत उजागरमें, नागर कहावे नाँहि ऐसी वित धारेतू॥मैंतो दुखिया हौंआठोयामवीतेध्यावतही, ताहिकेअराधेसाधेनेक दयालारेतू ॥ भईममभाग्यकीसहाईतेरीसहीहाय, गईकरजारेदेखदिसादईमारेतू ॥ ८१ ॥

वसंत सवैया--अंबकेमंजुलमोरकढे, चलवागत डागपैकीजिसमागम ॥पीपरदेशनजाइबोउच्चित,जा इहैंतोउरमेंदुखदागम॥ जी न करोनटनागरचंचल, मानियेश्यामकबूकतोखागम ॥ गायोहैरागगुणीर

सछायोहै,आयोहैकंतवसंतकोआगम ॥ १८२ ॥
कैहैंकहासुतबीरबटोहुन, गैहैंततोउनहैं समुझैहैं ॥
सुधलेहैंकबैनटनागरसों,कहोपैहैंमहादुखकोसिखदै
हैं। व्हैहै महा मदनज्वर जीयतो, ओसकी बूंदलों
पोज बिलैहैं ॥ अैहैं वसंत बजैहैं बयारन, अैहैं
पिया यमके गण ऐहैं ॥ १८३ ॥ इतकी सुधि
देहैं गुलाब प्रसूनते, अंबहु मोर दिखावहिंगे॥अरु
कोकिलकीरकपोतकलापि,महामधुरस्वरगावहिंगे
॥ नटनागरबागनआगसोलागिहै, धावनभोरहुधाव
हिंगे॥इतनेहैंबकीलहमारसखी, कावसंतपैकंतनआ
वहिंगे ॥ ८४ ॥ एहोबटोहीव्यथाकीकथाकोसुना
यकहोनटनागरजाँहीं ॥ आइवसंतदहंतहैदेहको,द्यो
सनिशाकछुहीनँहिभाँहीं ॥ हाअबबीरइतीविनती,
समुझायसुनायकहोउनपाँहीं ॥ पाँचहुप्राणप्रवास
बसे,उडिहैज्योंकपूरवघूरकीनाँहीं ॥ १८५॥
वर्षाऋतु० कवित्त–औघटअनोखेघाटसूझत

कितौनवाट,नाटितमयूरगणजोवनउपट्टेमें ॥गाजघ
नघोरशोरघोरापिकचात्रकन,जिगनूँउदोतहोतकुंज
केचुहट्टेमें ॥ राधेनटनागरजूखडेथेकलिंदीकूल,
भीजतदुकूलखुलेपौनकेउपट्टेमें ॥ चपलाचमक
देखचपलचमकचली,दौरदौरदूरहीतेदुरतदुपट्टेमें॥
॥ ८६ ॥ बह्रनघोरजामेंदह्रनशोरभारी,
नह्रनखारतारलैहैंगतिपूरकी ॥ झिंगुरनशो
रहूपपैयनकीरोरपर, जोरबंधकोयलकोछिपीगति
शूरकी ॥ ऐसेमांहिंकुंजपुंजगुंजतमधुपगण, आ
गरचलोननटनागरहजूरकी ॥ दहकखद्योतमहक
तधुरवाईपौन, लहकलतॉनतापैकुहकमयूरकी ॥
॥ ८७ ॥ प्यारदिनचारकरबदलाबिहारकीनो, आ
ईऋतुवरपाकीमानोमीचचेरीसी ॥ कारेअतिभारे
न्यारेबादराबिकटदौरे, बीचबीचविद्युतलताहैकाल
प्रेरीसी ॥ नैननटनागरनिहारेबिनरोयरोय, आँसु
नउमंडकरीओलनकीढेरीसी ॥ नेहकीउजेरीसोतो

निकटनपाईहाय, आँखिनहमारीआगेआवतअँधेरीसी ॥ १५८ ॥

सवैया–नटनागरराधिकाकुंजमेंआज, लखीवरषाऋतुसादररी ॥ मुरलीअरुझाँझरबाजतहैं,पिकचातकबोलतदादुररी ॥ जलस्वेदरोमांचपैआयकैयों,बहिकैसबहीभरेखादररी ॥दुतिदामनीसीमहारानीदुरै,तनसाँवरोसाँवरोबादररी ॥ १५९ ॥

कवित्त– गावनलगेहैंअतिपावनमलारगुनी, आवनहूमित्रकोहमारेकाँननायदे ॥ झिल्लीकेकीचातिकऔदादुरकेबोलनमें, विषसाभरयोहैतामेंअमृतबसायदे ॥ काँननमेंप्यारेनटनागरपधारबेकी अवधसुनायअधमृतकजिवायदे ॥ सावनकोआवनसुनायोपिकरावननें, आवनजोभावनकोधावनसुनायदे ॥ १६० ॥

सवैया–चहुँओरतेचित्राविचित्रचमू, बदरानिजरूपदिखावहिंगे ॥ पिकचातिकझिंगुरदादुरमोर,म

होउनमादवतावहिंगे ॥ नटनागरवृक्षलतालिपटी, लखिकै सुधिकानहिंलावहिंगे ॥ सखिचातुरमासमें आतुरह्वैकर, चातुरकानहिंआवहिंगे ॥ १६१ ॥

कवित्त–लालअरुपीतश्वेतश्यामउठेचारोंओर घोरअतिभारीजोरभरेआतजातहै ॥ धूजतहैधरणीविहारलखिबादरकें, प्यारेनटनागरवियोगतेन भातहै ॥ एरीमेरीबीरधरधीरतूनिहारनींके, मेघमतमानतेरीनाहप्राणघातहै ॥दाशरथीरामरणरोखे दशमाथशीश,जाकीवाहनीकेरीछबानरादिखातहै॥ ॥ १६२ ॥ ठौरठौरमोरमुखमोरये करैहैंशोर, चोरचितचातकचवायमनचावेक्यों ॥ जाहीपरदादुरये-दाहतहैमेरोदिल, झिल्लीपिकझारझारझीनोझीनो-गावेक्यों ॥ हारहारहाहाखायकहौंशिरनायनाय, विर्हनटनागरकोकोउविदभावेक्यों ॥ दौरदौरआवे-इतकारीघटाजोरजोर, घोरघोरहायवरसानेबरसावेक्यों ॥ १६३ ॥

दोहा—प्रेमपत्रगोपीनप्रति, ज्ञानयुक्तकहिगाथ॥
कहतकृष्णप्रतिपुनिकथा,सुनिहरिहोतसनाथ६३॥

अथ उद्धवको बोलबो श्रीकृष्णप्रति (पद)

ऊधोविसरि गए सब बातैं ॥ वे नँदनंदन दूर बसतका मथुरा निकट यहाँतैं ॥ कबहुँकतोयाहू-दिशिआतेमातपिताकेनातैं ॥ छुटन न पावत राजकाजते काविधिआवैंयातैं ॥ अबजानीइत-लाजलगतहै ब्रजविचवदनादिखातैं ॥ औरसबैतु-मसोंपूछैंगे निशाकछूयकबातैं ॥ नटनागरकेहाल-सुनादो कुबरीयुतकुशलातैं ॥ २६४ ॥ सारेब्रज-सोंमैंवैर बसायो ॥ नाथमैंपातीदेपछितायो ॥ का-जानैंतुमकहालिख्योथोजाकोफलमैंपायो ॥ जित-तितजायकतहुँनाहिंआदर महाअयशशिरछायो ॥ माधोमैंपंडितपनतजिकै उनकोगायोगायो ॥ सी-

खसुनायकहीसवहमसोंकाहूमननपत्यायो ॥ उम-
डीप्रीतघटादशदिशितेवरषप्रवाहबढायो ॥ भरि-
भरिढरतढरतफिरिभरिभरिउमँगिउमँगिझरलायो।
ज्ञानभक्तिवैरागविचारोएकपलमाँझबहायो ॥ व्हाँ-
नचलैब्रह्मादिकहूकीकरैआपनोभायो ॥ कोउनसु-
नैंकहैंकछुहूनाचलेकहासमुझायो ॥ पूछैकवनक-
हैको उनतेनाहकफँस्योखिचायो ॥ आपसबीच-
करैमिलिवतियाँरोरा रोर मचायो ॥ कुबिजाक्रूर-
कंसकीदासिवासोंमनउरझायो ॥ यहाँकौनरोकत-
थोउनकोवहाँजायकियछायो ॥ वेअक्रूरक्रूरमतिउ-
नकैउद्धवसाहितागिनायो ॥ हाहाखायपाँयसबकेपर
मुशकिलछोरछुरायो ॥ प्रेमपयोधिमग्नसबवेतोवृ-
थामोंहिंपठवायो ॥ वे उनमत्तमत्तप्रेमैमेंकउनि-
ओरमतभायो ॥ नटनागरकछुकहतबनैनाउनको-
कोलानिभायो ॥ १६६ ॥

दोहा--कियेप्रश्नउद्धवतेपुनि, कृष्णअतृप्तकृपाल ॥ यहकौतुकममसुननाहित, काबोलींब्रजबाल ॥ १६७ ॥

अथ प्रेमपत्रिका पचीसी।

सवैया—बसीठिहुरावरीफोटिपरी, यहयोगकीचीठिजरीसोजरी ॥ ब्रजबासीतोप्रीतिउपासीभए, इनकीजगहाँसकरीसोकरी ॥ अहोऊधोजूसूधोसोमारगछाँडिकै, भाँडक्योंहोहिंअरीसोअरी ॥ नटनागरतोनिरवंधभए, हमप्रेमकेफंद परीसो परी ॥ ॥ १६८ ॥ समुझावतकौंनकहासमुझैं,हमतोयहबानवरीसोबरी ॥ दुखियासुखलाभनहानिकहा, विधिरेखलिलारधरीसोधरी ॥ अहोउद्धवजापैयायोगलिख्यो,यहैयोगनहींहैअयोगकरी ॥ नटनागर० ॥ १६९ ॥ नहिंग्रामसोंधामसोंकामकछू, हमनेहकेनग्रढरीसोढरी ॥ कुलकानरुलोककीला-

जसोंआज, उजागरहोयटरीसोटरी ॥ अहोउद्धव जू कितनीककहैं, हमतोयहप्रीतिभरीसोभरी ॥ नटनागरतोनिरवंधभएहमप्रेमकेफंदपरीसोपरी ॥ ॥ १७० ॥ यहप्रीतिकीरीतिप्रतीतिसुनी, कछुनीतिअनीतिखरीसोखरी ॥ तुमजानतनाहिंअजान भए, कछुभाग्यकीरीतिफरीसोफरी ॥ अहोउद्धव-जूनिशिद्योसयहाँ,कोउवूडीसोवूडीतरीसोतरी ॥ नटना०॥१७१॥ उतजायउजागरवेतोभए, हमने-हकेनेमछरीसोछरी ॥वहजीवनमूलतोयोगलिख्यो, हमप्रीतिकेरोगमरीसो मरी ॥हमकोवैरागवहाँअनु-राग,नहिं शोचकछूहैहरीसो हरी॥नटना०॥१७२॥ एकआएथेक्रूरअक्रूरयहाँ, उनसोंभरपेटलरीसोलरी वहवेदपुराणकीरीतिकहै,इतनैंनसोंनीरझरीसोझरी हमहारेनटेकटरैकवहूं, यहप्रीतिपयोधिगरीसो गरी ॥नटना० ॥ १७३ ॥ रसग्रंथिकीरीतिकुरीतिभई, विपरीतिकेपंथचरीसोचरी ॥ उतकूबरीनीतिनिधा

नभई, इतऔरहिघाटघरीसोघरी ॥ जहाँउद्धवसे-
अक्रूरमुसाहिब,तौसाहिविरीतिसरीसो सरी ॥ नट-
ना० ॥ १७४ ॥ कहोकौंनसेवेदपुराणकेवाक्य,
अवाक्यसोंप्रीतिफरीसो फरी॥ यहैपातीनछातीपै-
कातीधरी, हमरीसुनिबुद्धिगरीसो गरी ॥ब्रजवास-
तेऊधोप्रवासकरो, अवखूबसीछातीदरीसो दरी॥
नटना० ॥ १७५ ॥ मतिगोकुलकीकुलकीतजिकै,
भजिकैउरचेरीभरीसो भरी ॥ हमतोविगरीसगरी-
वृजग्वालिनि, होंहिसुरी न नरीसो नरी॥अवयाहि-
कोशोचसँकोचनहीं, सवप्रीतकेपंथडरीसोडरी ॥
नटना० ॥ १७६ ॥ कहोकौनसेनेमकहोकुलकौन-
सों, कौनसीजातिधरीसोधरी ॥ कहोकौनसोसासु-
रोपीहरकौन है, प्रीतकेरंगगरीसोगरी ॥ हमउद्ध-
वकाजसवैसोतजे, वहैवाविधिदेखोकरीसोकरी ॥
नटनागर० ॥ १७७ ॥ वहप्रीतियशोमतिकी-
परित्याग, सखानपैहानिकरीसोकरी ॥ अरुनंद-

केभाग्यकिएअतिमंद, सोवृद्धकीसुद्धिभलीविस-
री ॥ कितनेगुणऔगुणकैसेकहैं, कहतेयहजीभ-
अरीसोअरी ॥ नटनागर० ॥ १७८ ॥ जवदा-
नीह्वैमाँगतथेदधिदान, नदेतथेजापैखरीसोखरी ॥
वहमीठोसोगायवजायकैबाँसुरी, नाचनचायकैदा-
सीकरी ॥ फिरहाहाखवायनिभायकैनेम, अनेम
ह्वैलागमरीसोमरी ॥ नटना० ॥ १७९ ॥
फिरिफागमेंवाअनुरागरँगे, रुसुहागगुलालडरीसो
डरी ॥ अतिप्रीतिअबीरसुबीरसमेत, उडावतधुंध
अरीसोअरी ॥ जिहिंसों अब लाजत राजतह्वां,
यहाँयोगकेसाजजरीसोजरी ॥ नटनागर०॥१८०॥
जवकुंजकछारकलिंदिकेकूलपै, फूलकेफागमेंगोद
भरी ॥ फिरिरागसुनेंअनुरागरँगीह्वै, सुहागकिकीच
अनेकझरी ॥ सुखसारेगिनेंएकचेरिकेसाथ, यागा-
थतेदेहजरीसोजरी ॥ नटनागरतो० ॥१८१॥ वँहैं
दासखवासमेंपासरहैं, उपहासकीवातनजीयधरी ॥

विनयोगलिखेहमसाधतयोग, यारोगसों देहगरीसो गरी ॥ अबउद्धवहारेहाहातुमसों, रहियेचुपचापक रीसोकरी ॥ नटना० ॥ १८२ ॥ वहैंबाँसुरीकीसुन आँसुरीकाँनन, काँननधीरकबौंनधरी ॥ नघरी कहुँचैनपरैघरमें, मनमेंनावियोगअधीरकरी ॥ वहैं बानविहायबिकायगये, हमैंहाययेहीकैभुलायमरी॥ नटना० ॥ १८३ ॥ वृजरानीतोआजबिराँनीभई, पटरानीसुहाँनीसीकुञ्जकरी ॥ वहैंचेरीरचीचित-कीलखिचातुरि,आतुरसोंकरप्रीतवरी ॥ अबवाहि सोंनेहानिबाहियोजू, वहैं आपकेभाग्यहुतेउबरी ॥ नटना० ॥ १८४ ॥ वहै क्रूरकलंकिनीकंसकी दासी, उपासीव्हैवाकेसहैदुखरी ॥ नाहिंचैनपरैपल देखेविना, हरियायलज्योपकरीलकरी ॥ अहोउ-द्धवनेम न प्रेमकोजानत, देहौंसुनायपुकारकरी ॥ नटना० ॥ १८५ ॥ कबप्रेमकोपंथपिछानतेतो नाहिंठानतेयावृजसोंजकरी ॥ कुलटानकेफंदेफंदेहौ

फवे, हमैंचैनभयोसुनकेसगरी॥इतउद्धवकोपठवाय
हुजू, हुलसैहियबातसुनेतुमरी॥ नटना०॥१८६॥
हमप्रीतिकीरीतिप्रभासुनिकै, गणिकागजगीधअरू
शवरी ॥ कपिकीटकिरातविख्यातहैवात, सुया,
हितेनेकनजीयडरी ॥ फिरिध्रूप्रहलादविभीषणसे-
मनधारिकेनाथयोंभीरकरी ॥ नटना० ॥ १८७॥
हमसूधीकोटेढीगनीगणिका, वात्रिवंककोअंकधरी
सोधरी ॥ फिरवाहिकोआयशुपायअहो, निशि
राजकेकाजसुधारतरी ॥ जिनकेहितहायवसीठ
भए, तुम्हैंलाजनआजभईजवरी॥नटना०॥१८८॥
नवनीतकेचोरनिहालभए, निधिकूवरीपायउजाग-
ररी ॥ यहैभालकीवातविचारियेजू, विचकूपपरेगु-
णसागररी ॥ फिरलाजनआजलौंताकोकछू, भये-
नंदकेवंशउजागररी ॥ नटनागर० ॥ १८९ ॥ पशु
वाँनमेप्रेमकोनेमसुनों, जलहीननजीयतहैसफरी ॥
मृगमोरचकोरअहीभ्रमरे, फिरचातककंजअरूम

करी ॥ चकचंद्रलखेअतिहोतहैमंद, कुमोदकेवृंद-
महासुखरी ॥ नटना० ॥ १९० ॥ ब्रजवासतेआ-
जउदासभए, यहाँदासरुदासीनथीसगरी ॥ रहिवा-
कीखवासीमेंहाँसीकरी, यहलागतहैहमकोविषरी ॥
अबउद्धवयोंसमुझायसुनाय, कहोवृजबालतोयों-
झगरी ॥ नटना० ॥१९१॥वृजवासीमहादुखरासी-
भये, तुमदासीविलासीकीछापधरी ॥ यहैहाँसीहै
फाँसीकेथाँनहमैं, तुमदोनुहींएकसमानकरी॥वृज-
धीशकहायकैकूबरीईश, कहावतलागतरीसजरी ॥
नटनागरतोनिरबंधभएहमप्रेमकेफंदपरीसोपरी ॥

दोहा—संवतअष्टादशशतक, गएसतावनओर॥
श्रावणशुक्लत्रयोदशी, भईपचीससिभोर ॥ १९२ ॥

सवैया—उद्धवजूमनजोउमग्यो, उततोइतहूउर-
बीचउछाहथो ॥ चेरीरुचीउनकोलखिचातुरी, चो-
पकहाचितकोउतचाहथो ॥ प्रीतिकीरीतिकरीन-
करी, नटनागरसोंकहोकैसोनिवाहथो ॥ जोहमसों

हितहानिकियो, तौभूलिवोवाहरिकौनसोंसाहथो ॥
॥ १३ ॥ छाँडतनापलएकअकेलि, नपौढतहौपर-
यंकपैदंपत ॥ आपकेपाँवपैलोटतहैवह, वाकेपदा-
नललातुमचंपत ॥ उद्धवयोंकहियोसमुझायकै,
वाहिकोनामअहोनिंशिजंपत ॥ कूबरीकोनटनाग-
रजू, करिराखीभलीतुमसूमकीसंपत ॥ १४ ॥
पूरवरीतभईसुभई, फिरछूटछुटायगईनहिंमानी ॥
येब्रजलोगउचारतयों, नँदलालविकेअरुयेहूविका-
नी ॥ प्रीतितुह्मेंहमैंतूटगएकी, प्रतीतभईसबकोय-
हजानी ॥ जादिनतेनटनागरजू, करिरूपशिरोम-
णिकूबरीरानी ॥ १५ ॥ हमजानतहैंलरिकापनते,
जिनकेछलछंदअरूरसरीती ॥ योगकीपातीलि-
खीनटनागर, जानचुकीपहिचानहुबीती ॥ एकउ-
द्धवऔरसुनीकहैंथा, अवपागेहैंश्यामवहाँकोउती-
ती॥पीय नये वो नईहैंप्रिया,वेनयेनयेपंथनईनईप्री-
ती॥१६॥सुनोवेयदुवंशीहैंराजकुमार, हमैंकछुना-

पहचानहैंजूतुमपातीलिखायकैलायेइहाँ,ठगहौकि धौंसाहनकामहैंजू ॥ उलटेफिरजाइएह्वैहैअबेर,कि धौंयहरावरीबानहैंजू ॥ उतवेनटनागरनंदकेनंदन, उद्धवप्राणसमानहैंजू॥१७ अहोउद्धवचेरीसुनीहैंन-ई, नटनागरकोसुखदायनहै ॥ वहक्रूरकलंकिनीरा-नीकरी, ब्रजवासिनकोदुखदायनहै ॥ अनुरागउ-तैवैरागहमैं, सोफिरज्ञानइहैं मनभावनहै ॥ वहकूब-रीकोसबन्यायनबोलत, न्यायननाहिंकसायनहै ॥ ॥१८॥जादिनसोंवह नारिमिली, तबतेनितजीयब-धायनबाँटैं ॥ वेनटनागरहैंभँवरे, अवक्योंडेरिहैंक-होकेतकीकाँटैं ॥ योंब्रजबालाकैरैंबतियाँ, जहाँऊ-धोसनानकरैंनदघाँटैं ॥ औरसखीनइएकसुनी, ब्रज-राजबिको टुकचंदनसाँटैं ॥ १९ ॥

कवित्त–लोककुलवेदलाजजाहितेअकाजकी-न्ही, जाकेरसप्रीतिबीचसघनसनेरह्यो ॥ तोन्योहि-तइततेसुजोन्योउतनयोनेह, जाहूकोनशोचपोचमृ-

कुटीतनेरह्यो॥कूबरीभईहैरानी हमतोबिगानीहाय,
तोऊबिनदामनकीदासिकागनेरह्यो ॥ नटनागर-
क्षेमयुतआपयुगकोटिकलों, चित्तकीलगनजहाँम-
गनवनेरह्यो ॥२००॥ आएइतउद्धवलिखाएलाए-
योगपत्र, आपनकासीखचेरीदेखेजीजियतुहै ॥
नटनागरप्रीतिकीप्रतीतिकीनरीतिजानै, देखोरीअ-
नीतिराजकाजकीजियतुहै ॥ केतिकागिनावैपारना
वैयाकीयादऐसी,एकनाअनेकसुनबातैंरीझियतुहै॥
मथुरामेंआजकालऐसीसुनपाईमाई, कूबरीकन्हा
ईकोदुहाईदीजियतुहै ॥ २०१ ॥ एहोयदु
इंद्रत्यांपठाएआपउद्धवको, सोसबसुनाईहाययों
उत्तधसेरहो ॥ कैसेजगवंदरुकहायेव्रजचंद्रदेखो,
चेरीकुलटाकेउरनिशिदिनबसेरहो ॥ नामनटनाग
रधरायोक्योंनआईलाज, नंदजूकेनंदइतभृकुटीक-
सेरहो ॥ आशिषअमंदऐसेकहैंव्रजबालाब्रंद, मंद-
कूबरीकेमृदुफंदनफँसेरहो ॥ २०२ ॥ बसीठीके-

कामधाममथुराकेबीचजाको, आयोयहगाँवनाम-
जाहरसुनायोगाय ॥ सुमुक्तिकाजयोगवैरागकीलै-
आयोपाती, छातीअतितातीहोतजाकेबांचवेको-
पाय॥नटनागरदूरनहमारेघटपूरनहै, याहीपरदेखि-
येजूइतनोअन्यायहाय ॥ मोहनसिखावतेतोसारी-
मिलिसीखजाती, उद्धवसिखावैज्ञानकौनविधिसी-
ख्योजाय ॥ २०३ ॥ आपभलेआएसाथपत्रहूलि-
खायलाये, सबमनभायेगायेजातनगलानीहै ॥ ह-
महैंगवाँरीबेसवारीसबब्रजवारी, भारीमतवारीएक-
सुनीकांनबानीहै ॥ नटनागरसागरहैगागरसमावै-
कहां, हमहैंउजागरउचारेजामेंहानीहै ॥ ऊधोक-
हाछानीतुमअबलोंनजानीहाय, जैसीउनठानीसो-
तोअकथकहानीहै ॥ २०४ ॥ वृंदावनबीचऊधो-
शंकगुरुलोगनकी, मथुराप्रवेशकैकैनिपटनिशंक-
भो ॥ ललितात्रिभंगीनटनागरकहायहाय;बंकदा-
सीसंगबैठिचित्तहूत्रिबंकभो ॥ कंवूपयगंगकीतरं

गतेमहानशुभ्र, यशकोसमुद्रऐसोवृथायुतपंकभो॥ चंद्रवंशीअवतंसमोहनमयंकशुद्ध, पूरणप्रकाशवीचकूवरीकलंकभो ॥ २०५ ॥

सवैया–कहाकहूँआपकीयाबुधको,गुणकेतुमलालजूसागरहौ ॥ वहैंकूबरीकोपटरानीकरी, अगुणीहरिजूगुणआगरहौ ॥ नहिंदेखिपरैतुमसेअवलौ, निकलंककलंकमेंनागरहौ ॥ वहैजातकुजातहैकूवरिया, नटनागरवंशउजागरहौ ॥ ६ ॥ अहोउद्धवयाविधिजायकहो, अवकूवरीसेपृथिमादिमेंकोहै ॥ सुरलोकभुलोकरुऔरतलातल, सातहुदीपकोदीपकसोहै ॥ नरीअसुरीसुरीताहिपैवारत सोहनीमोहनीमूरतजोहै ॥ हदजोरोमिल्योनटनागरजू, जोअलेखहिआपअजातहिवोहै ॥ ७ ॥ कामनऐसीलिखीनसुनी, तिन्हैछाँडतनातुमआठहूयामन ॥ यामनमेंतुममायगए, अरुछाँडदियेवरकेपुरधामन ॥ धामनढाककीछाईकुटी, नटनाग-

रजूवहैकूबरीभामन ॥ भामनमेंबासिकीन्हभले, हदकीन्हललापरकूबरीकामन ॥ ८ ॥ वेपतिया लिखिवेजातिया, मतकीछतियाकतियासीखगीहै ॥ काकहिएउनकीगतिकी, इतकीतजिआसकीचेरी-सगीहै ॥ वेनटनागरकानिरदोष, त्रिदोषभरीसन प्रीतिपगीहै ॥ आजहिकालसुनीहमतो, वहकूबरि-याअबकानलगीहै ॥ ९ ॥

कुँडलिया–कुबरीअंगनिहारकै, रीझेथेनँदला-ल ॥ होशजिन्हैंकछुहीनहीं, हालहितेबेहाल; ॥ हा-लहितेबेहाल स्वप्नद्वारापुरआयो ॥ चौंकिच-कितह्वैरहेरूपचेरीकोछायो ॥ नटनागरधारिध्यान-लिखततनदुबरीदुबरी ॥ आधेआधेबोलकढतहा-कुबरीकुबरी ॥ १० ॥

अन्योक्ति सवैया--वरणाश्रमकर्मउपासनमें, दृढनेमसुन्योशिरतातेधुन्यो ॥ व्रततीरथयज्ञ पुराणकुरान, मैंनेमको जानिकैनाहिंगुन्यो ॥

पुनिलौकिकहीवेवहारमेंनेम, प्रधान कियोतबना-
हिंचुन्यो ॥ नटनागरनेमसुन्योंसबमें, परप्रेममेंने-
मलख्योनसुन्यो ॥११॥ जाहर हैंकलिकेनरनाहर,
वाहरशुद्धनमाहरमाहीं।माँसतथामदिरादिकसेवत,
लूंटछिनारमहामनभाहीं ॥ सुकृतकाजमेंलाजलगै,
अरुसाधुसमाजकोदेखिडेराहीं ॥ गाहकथेजबथे
नगुणी,रुगुणी अबहैंतबगाहकनाहीं ॥ २१२ ॥

कवित्त–भागीरथरघुअजदशरथरामचंद्र, कवि
नप्रतापदेखोअजौंलगिछाएहैं ॥ नटनागरयादवकु-
रुवंशआदिदेकै सब, औरहूअनेकनृप अच्छेप-
दपाएहैं ॥ भोजअरुविक्रमसेकविनकरप्रसिद्ध, क-
विनजोगाएदाताआजहूंनाछाएहैं ॥ बधरावतद्र-
व्यपायकविविसरायबैठे, बैढजेगँवारतोगँवारनने-
गाएहैं ॥ २१३ ॥अरथकिएहीविनअरथअभ्यास-
जाय, वर्णलघुदीरघकोयथायोग्यकाढिवो ॥ मात्रा-
अनुस्वारछंदभंगकोविचारराखै, स्वरललिताई-

सोंसभाकोचित्तमढिवो ॥ चातुरव्हैचाकरसुनेथेऐ-
सेआखरन, मूरखहूतेमौनगहैवाकेचित्तचढिवो ॥
नटनागरऐसेजोपढैतोमनमोहिलेत, चित्तनापसी-
जैतोकवित्तको न पढिवो ॥ १४ ॥ कहांशत्रुमित्र-
ताईजामेंवैरप्रीतिनाहिं, कहाँप्रेमनेमजहाँजाहरानि-
वाहना ॥ कहांसनमंधसगेपुत्रभ्रातमाततात, कहां-
कुलगोत्रजामेंवेदरीतराहना ॥कहांनटनागरजूनाग
रता अंगअंग, गुणरूपदोऊमिलेताकीहैसराहना॥
कहांवोहैंबाणजातेअरिकेनहरैंप्राण, तेवेनैंनकहा
लागेंनिकसैंजेआहना ॥ १५ ॥ रूपसोंनयौवन-
सोंकामधनधामहीसों, नामसोंनकामदेखोदीननँदु
नीकेहैं ॥ बीनरुरबावआदिनामकेनआशकहैं,आ-
शकप्रत्यक्षएकमधुरधुनीकेहैं ॥ नटनागरकाहूसो-
विवादकरनोहीनाहीं, जाहरहैहालमस्तताहीवी-
चनीकेहैं ॥ नरकेनगाहककत्योंगाहकननारिहूके,
यारिहूकेगाहकनगाहकगुणीकेहैं ॥ १६ ॥ योजग

वनाएविनकौनभाँतिवन्यौएसो, जाको कहैं स्वते सिद्धसाफबुधवारेहैं ॥ ज्ञानकोनलेशकौंनिभाँति- ह्वैप्रवेशदेखो, कहाउपदेशकरैभ्रमतमभारेहैं ॥ नागरतादेखोनटनागरकीठौरठौर, जिनकोलखा- तनाहींभीतरसोंकारेहैं ॥ शोधनकियोनसारेनतं- नबिसारिवैठे,वोधमतवारेतोअबोधमतवारेहैं॥१७॥

सवैया—भानुकोक्याउपमानखद्योतकी, रंकस- मानधनेशकोकीजै ॥ साँपधराकेसमानकाशंकर, डोडूसमानकाशेषगनीजै ॥ नटनागरसाँचरुझूंठ- समानका, ज्योंकुलटाकुलवानभनीजै ॥ नैंनकी- ऊपमाबाणकीकात्यूँ, कमानकीऊपमाभौंहकोदी- जै ॥ १८ ॥ आलमशेषसुजानघनानँद, जोजग- वीचयाजारअरूझो ॥ रंकरुरावकोभावनहीं, यह- रंगरँगोजिन्हैऔरनसूझो ॥ वाअलबेलीसी लैलि- निहारकै, पूतपठानकोजाहरजूझो ॥ जानअजान- भयेनटनागर, प्रेमकोनेमप्रवीणसोंबूझो ॥ १९ ॥

छंदवरवे—कूकनलगीकुयलिया, मधुरमहान ॥ हाहामित्रवियोगते, निकसतप्राण ॥ २० ॥ मोउरलाएमितवा, विरहदवार ॥ कियउधूरनिजकरते, अपनअगार ॥ २१ ॥ चिहकनलगेचतकवा, वरसनलाग ॥ बूँदपरसमोंअँगपै, मानहुआग॥२२॥ उमडेश्यामवदरवा, केकीकूक ॥ कीनहुमोरकरेजवा, सबमिलटूक ॥ २३ ॥ लागहुमासअसाढहु, भूहरियान॥मित्रविरहजलवहमें, पकरहुपान॥२४॥ सूरतधेरेमितकी, चषउरमाहिं ॥ सोवतजगताहि, चषते, निकसतनाहिं ॥ २५ ॥ एरेमित्रवहांजा; कादुखदीन ॥ सबसुखमेरेअँगते, लीन्हेउछीन ॥ ॥ २६ ॥ छेकेउमोरकारिजवा, विरहबँदूक ॥ तवतेचलतरहेनाहिं, हाउरहूक ॥ २७ ॥ देखहुयहाविपरितगत, वरसतमेंह ॥ तउझारनामिटती, प्रजरतदेंह ॥ २८ ॥ देखहुयहकसलाग्यो, नैनननेंह ॥ बूडेजलहिरहतहैं, सूखतदेंह ॥ २२९ ॥ मैंनाविरह-

दुखजानत, नैननदीन्ह ॥ काननकरधरशरके, कै-
सीकीन्ह ॥ ३० ॥ खटकतमोरकरेजवा, मुसकन-
मंद ॥ काविधिछूटहिहाहा, कोमलफंद ॥ ३१ ॥
मंदमंदमुसकनते, गाफिलपारि ॥ जाविचभौंहक-
टाक्षन, लीनेउमारि ॥ २३२ ॥ एहोमित्रवहांजा,
सुधिहुनलीन ॥ विरहव्यथाकियतनको, छिनछि-
नछीन ॥ ३३ ॥ मित्रमोरादिलसगुणजु, अक्षरया,
हि ॥ वसतअर्थसमातितउ, क्योंविलगाहि ॥ ३४॥
सज्जनकथाविरहकी, लखियनजाय ॥ कहिहैंयह-
अंबुदउत, कछुसमुझाय ॥ ३५ ॥ मित्रभएमोसों-
क्यों,कठिनमहान ॥ चलनचहतहैंअबतो, पाँ
चहुप्रान ॥ ३६ ॥ दीनीमित्रजुदेहै,विपतबला
य ॥ गिनतहुसंपतसोही,कहियनजाय ॥ २३७ ॥

सोरठा--थिरह्वैलहैनथाह, प्रीतिकूपसबहीपरे ॥
निहचैकठिननिवाह,करतेकछुनाहिंनकाठिन॥३८॥
हैयहबातअनूप,अचरजमानतमोरमन ॥ बिनसी

ढिनकेकूप, परैमरैफेरूपरत ॥ ३९ ॥ नाहिनकढ नउपाव, प्रीतिउदधिमोंहैपरे ॥ नहिंनवकाघरनाव, नहिंमलाहनहिंतूमरा ॥ २४० ॥ जावेडूवजहाज, जाविचकोपैन्योचहै ॥ पहुँचैकाविधपाज, विरह-पवनअतिशयप्रबल ॥ ४१ ॥ लागिउठीउरआ-ग, बुझतनपागेउदधिमें ॥ बूडकढेलेथाग,झरा कढेमुखद्वारह्वै ॥४२॥ विधिसोंनेकविचार, रतीवीं-वक्योंतपततू ॥ विरहादरददरार, पूरणह्वैनविरंचि सों ॥ ४३ ॥ उनकोजतनअनेक, घायलगतके-उशस्त्रके ॥ टाँकापट्टीनसेंक,विरहकटारीसोंविधे ॥ ॥ ४४ ॥ पुनिकितसाँझप्रभात,छिनाछिनवीततव-रषसम ॥ दरदीको दिनरात;कटनमहाअतिशयक ठिन ॥४५॥ जरेहरेहोइजाय, आगपरेआरण्यमें ॥ फेरनहींहरियाय,विरहाअगनीसोंदहे ॥ ४६ ॥ नरतनपुरसोपाय, वरषाकालविचारिकै ॥ विर-हाअतिथआय,उरघिचन्यायनिवासकिय ॥ ४७॥

तेनहिंजामैंफेर, विरहकुहारेसोंकटे ॥ वरषैसुधा घनेर,सिच्छाअंबुदछायकै ॥ ४८ ॥ अजवअ नोखोघाय,विरहशस्त्रअतिशयबुरो ॥ नाटसा लरहजाय, नाहिंसालदरसालना ॥ ४९ ॥ कुल म्रयादध्वजधार, लोकलाजकीनावकर ॥ यदपि- होवैगापार, करणधारकरवेदमत ॥ ५० ॥ विरहा उदधिअथाह, मित्ररूपजामेंरतन ॥ मरनठांनि परमाह, मरजीवाकीधारिमत ॥ २५१ ॥ जापै निधरकनाँच, वरतबाँधिनिजसुरतकी ॥ जबमानै जगसाँच, गेंदबनालैशीशकी ॥ ५२ ॥ हाकेशो दुखदीन, नाहिंमाऱ्योपाऱ्योनहीं ॥ पक्षीमनपरहीन, कीन्होंविरहावधिकनें ॥५३॥ नाहिंनलुकनसमाज दिलद्विजबुधिपरविरथभे ॥ विरहअचानकबाज, आनिपऱ्योआकाशते ॥ ५४ ॥ होतछुयेमतिहीन, आयधनंतरहाथकों॥विरहहलाहलपीन, वंचैनाहिं विरंचिसों ॥ १५५ ॥ तिनकोअतिअनुराग, चारु

बुद्धिचतुरानकी ॥ रागअलौकिकआग, जारन
विरहीजनहृदय ॥ ५६ ॥ विरहीमारनधार, प्रेरत
हैलूलपटको ॥ ग्रीषमअजवगँवार, कहाजरेको
जारही ॥ ५७ ॥ बाणनैनसंधान, भौंहकमानक-
सीसकै ॥ मानहुमदनानिसान, छूटतउरमें रुपि
रहे ॥५८॥ लियेसकलसुखछीन, विरहाअग्निलगा-
यकै ॥ आहलकुटियादीन, दिलदीकंमरतोरकै ॥
॥ ५९ ॥ जालिमविरहजवान, कांतसमृतमादक
पिये ॥ ऐंचीकानकमाँन, प्राणबचैंतउखटाकिहैं ॥
॥ ६० ॥ जोजाहीकोखाय, कहोताहिकोडरकहा॥
तारखहूजारिजाय, विरहाभुजँगफुँकारते ॥ २६१ ॥
मोसप्रीतमेंनाय, मोदिलपीतररूपको॥विरहातपत
तपाय, कीन्होंसोनोंसोरमों ॥ ६२ ॥ धारलईचित
धीर, नैंनबाणदुखखायके ॥ पंचबाणकीपीर, जात
नबाधाक्योंकरै ॥ ६३ ॥ भौंहकमानकठोर, कान
बराबरतानिकै ॥ त्राणत्वचातनफोर, नैनबाणनि-

कसतभये ॥ ६४ ॥ अँचैमदनमनओप, ऋतुवसंत योवनलहर ॥ लज्जाअंकुशलोप, मनमतंगउनमत्त फिरे ॥६५॥ सोसँयोगसुखदान, वारोंमित्रवियोग पै ॥ येवियोगसंगप्राण, वहसंयोगसुखथिरनहीं ॥ ॥ ६६ ॥ वृक्षलगावतकोय, पयप्यावतरक्षाकरत॥ तोसोंकिसेहोय, बोयबडोकारिकाटिबो ॥ ६७ ॥ इश्कअजबउरझेर, पर्‌योआनिमोशिरपसारि ॥ चाहूँकियोनिवेर, नहिंसुरझतउरझतअधिक॥६८॥ येहोमित्रअनीत, कीनींतैंमोसोंकाठिन ॥ हाकैसी यहप्रीति, सुखलैदुखवदलादियो ॥ १६९ ॥ है व्याधीमनमाँहि, सोतूजानतनेकनां ॥ निशितर काढतखाहिं, तनरँगछेदेहोतका ॥ ७० ॥ दिनबीते दुखक्षीण, होतजगतसाँचीकहत ॥ नितप्रति होत नवीन, बिरहव्याधिविपरीतगत ॥ ७१ ॥ पूछे कियेउपाय, जितेसयानेजगतके ॥ दिनादिनदूने घाय, मोंउरतेनाहींमिटैं ॥ ७२ ॥ बचैनयोबीमार,

कोटियतनयाकैकरो ॥ मिलैमित्रदीदार, जीवोहै याकोजोदिन ॥ ७३ ॥ गईकरैजोखाय, विरहअग्निअतिशयविकट ॥एकहुनाहिंउपाय,कियोनहै न करैनको॥७४॥ योंदमकतइकदाग, मोउरऊजरवीचको ॥ मानहुजरतचिराग, सूनेशहरअटान ज्यों ॥७५॥ हितकरअधिकहसाय, भोरेह्वैअतिभूलदे॥फंदनवीचफँसाय,नैनकुटिलन्यारेभये॥७६॥ सुनहुपाथिकममसीख,निकसोजोवापुरनिकट॥दरशभिख्यारीभीख, माँगतयोंकहिदीजियो ॥ ७७ ॥ नैनांनिपटअन्याय, कियोसोकैसेमैंकहौं ॥ अवयहदेखोहाय, करकाननधरदूरह्वै ॥ ७८ ॥ फँदवँधनाशिथिलात, कालकठिनगाफिलवधिक ॥ मनखगक्योंअकुलात, अवकाउडिहैछूटिकर ॥ ७९ ॥ भईअचानकभेंट, पाँवसुवुधितूटततसै ॥ चीताविरहचपेट, मोंमनमृगकीकौनिगति ॥ ८० ॥ वैठेमित्रविसारि, गतिइतकीकितियकालिखूं ॥ विरहा-

मरुततुषार, जारतमोंमनकमलको ॥ २८१ ॥ करिणीमीतनिहार, कपटफैलऊपरकियो ॥ मोंमनकुंजरपार, नैनबधिकयाविधिलखो ॥ ८२ ॥ विरहाविषमदवार, मनवनकेदाहतविटप ॥ यहअचरजहैहाय, डहडहातनितप्रेमतरु ॥ ८३ ॥ होहिविजयनहिंहार, मित्रसहायकहैनिकट ॥ विरहावाघवकार, मोंमनयुधजूटतभयो ॥ ८४ ॥ रैमनमृगनिरधार, मित्रसहायकहेरमग ॥ कीनोंकहाविचार, वैरविरहमृगराजसों ॥ ८५॥ विरहअमोघबँदूक अभिप्रायहैअस्त्रसम ॥ करत करेजा टूक, त्वचामाहिंदीसेनहीं॥८६॥चित्रमित्रकोचाहि,लखतनलोयनलालची ॥ मत मैलो व्हेजाहि, नितप्रतिध्यानकियोकरै ॥८७॥ महामोहतमकूप, जानबूझकैसपऱ्यो॥तहाँस्वादहैअनूप,परपागेजाकोमिलै॥८८॥ एहोमित्रविसारि, अत्यकठिनधारीकहा ॥ मारनहैतोमार, कैठवारानिरबंधकर॥८९॥विरहवडीवज

राग, जाकेउरऊपरपरे ॥ कढैसुधासोंपाग, आतशनाबूझैअबश ॥ ९० ॥ बीतीऊमरमोर,बीतीनिशिनवियोगकी, ॥ हाकबहैहैभोर, यायोंरहिहैघोरतम ॥ ९१ ॥ बरषतहैऋतुएक,उमँडमेघअतिगर्वयुत ॥ क्योंनहोहिवितरेक,षटऋतुचषवरस्योकरै ॥ ९२ ॥ प्रेमतरूनिरमूल,कियोचहैदुर्जनवचन ॥ होतसघनफलफूल,द्वैससुधाजलपायकै ॥ ९३ ॥ दुर्जनवचनकुठार, छेदतनिशदिनप्रेमतरु ॥ छिनछिनबढतवहार,प्रीततोयपोषणकिये ॥ ९४ ॥ छुईनविपतिशरीर, बातबनावैविहँसिकै ॥ चष्मजख्मकीपीर,कोजानैखाएविना ॥ ९५ ॥ दोहा॥ दंपतिप्रीतिसुपरस्पर,योंभासतदुतिअंग । बहुतदुरायेदुरतनाहिं,ज्योंसीसीकोरंग ॥ ९६ ॥ मनभीज्योरसरागमें,अधिकबढावतआग ॥ हैसंयोगशृंगाररसर,हैवियोगवैराग ॥ ॥ ९७ ॥ गजयोवनउनमत्तचल्यो,अँचैमैनमद

ओप॥शंकासंकुलतोरिकै,लज्जाअंकुशलोप॥९८॥

छंदद्वावर्त—जियरेधकलागीहै विरहानलज्वाला की॥मानोक्योंपूछोतुमबातैंमतवालाकी॥औरतोह मइयमाउपवनमेंअविलोकीथी॥झटपटकेलटकेपर नजरोंकोझोकीथी ॥औरोंसबसखियोंकेआगेचलि-आतीथी ॥ रीझीरिझवातीअरुगातीबजवातीथी॥ दान्योकनदाँतोंपरमिस्सीदिलवाईथी ॥ तापरमि-लसखियोंनेबीडाखिलवाईथी ॥ झुकझुकतेलटक-नपरवेसरकेझालेते ॥ प्यारेरसछकियानैननोंके प्यालेते ॥ बासनविचजाहरगतिजूडेकीबाँकीथी ॥ धानुपकेनागनछवि ऐसीउपमाकीथी ॥ मा-जिमपरसोहैंकरभौंहैंमटकातीथी ॥ खोंचेरसि-कनकेमनभीतरखटकातीथी ॥ लोयनकेकोयन्-परअलकैंदोलटकेथी ॥ भारीमतकवियोंकीउप-माकोंभटकेथी ॥ चटकीलेचेहरेपरबंदीछविदेदी-त्यों ॥ चंद्रासनवूडनभाह्वैदीसरमेंदीत्यो ॥ भौंहैं-

अलसौंहैंटुकटेढीकरभालेथी ॥ जालेदिलआश-
ककेतिनकोफिरजालेथी ॥आखेंपरकाजरकीरेखेंअ
धिकातीथी ॥ प्यालेमोहब्बतकेभरपीतीअरुप्या-
तीथी ॥ बातैंमुखपंकजतेक्याअच्छीबोलीथी ॥
खतर वा प्यारेकेचितकीवृतखोलेंथी ॥ साँचेकी-
ढालीसीबाहियोंपरसोहेथा ॥ मनमथकीफाँसीज्यों
बाजूबँदमोहेथा ॥ नखरेतेसखरेपरबंधोपरनच
तीथी ॥ जाचकहुयआँखोंवारूपाहिकोजचतीथी ॥
दावनकेदारोंपरजरकसूकुच्छदमकीथी ॥ चकचौं-
धीपडपडकैआँखेंदोयचमकीथी ॥ दुपटाउडघूमर
तेनाभीटुकदरसीथी ॥ प्यारेकीअभिलाषापरतर-
सोथेपरसीथी ॥ तालीकेपटकापरचटकीकालटका
था ॥ भटकाथाखटकाइकझटकादोवटकाथा ॥
झाझरझरनाहटपरजेहरकाझनकाथा ॥ ठुमकेग-
तढीलीपरविछुवनकाठनकाथा ॥ भुजउलट-
नझुकनेपरछूटनगतिभिडतीथी ॥ झालायुतगु

जरीनगविजुरीसीझडतीथी ॥ गोरीसीबाँहिंयेंपरगु घरीगरनावेथी॥ झुमकझुमकलहँगेपरकाँचीझरना वेथी ॥ जुमलेसँगआलिनकेझूलेचढझूलेथी ॥ ह-स्तीमतवालेमनमेरेकोहूलेथी ॥ मसकेत्तनससके रसत्रसकेमदमातीथी ॥ कातिलकोफिरकातिल करनेकीकातीथी ॥ बानिकतेबागनमेंसखियोंवि चवैठेथी ॥ आशकवेलाशकचषनाशकाविचवैं-ठेथी ॥ जाकेचषअनियारेलागेसोइजानेंगे ॥ मुख डेकीबातेंविनभुगतेकसमानेंगे ॥ २९९ ॥

दोहा–भुजउलटनउकसनकुचन, मुसकनभ्रु-वातिरछान ॥ कमरभ्रमणघुमरनवसन, उरउरझ तगतिआन ॥ ३०० ॥

छंदद्वावर्त--यारोनिशिसोवतइकसुपनासाआ-याथा ॥ जाकोलखिमेरेउरआँनदघनछायाथा ॥ सोउसकोजाहरकहिकछुयकवतलाऊँमैं ॥ गानां नहिंवाजिवपरकछुयकतोगाऊँमैं ॥ देखामहलाय

तएकपलकोंकेलगनेमें ॥ वैसीकहिंपेखानाजाहिर विचजगनेमें ॥ उसकीतैयारीथीमानिंदगुलक्यारीके ॥ जिसकेथेपरदेचिककिम्मत्तजरभारके ॥ सोधकेझोलेउसभीतरउठिआतेथे ॥ जापरमतवारेह्वैमधुकरझुकजातेथे ॥ थीउसमेंदीपककीबत्त्योंकीमालेंसी ॥ जिसपरथीफाँनूसेंमनमथकीजालेंसी ॥ निश्चलसीजोतिनकीउपमाँदरसावेथी ॥ मौनीवैरागिनिमिलिब्रह्महिकोध्यावेथी ॥ उनहींआवासोंढिगसुंदरबागीचाथा ॥ मानहुद्रुमसारेजलअमृतकासींचाथा॥जामेबहुकेकीअरुकोकिलमिलबोलेथे उरझेमनवालोंकीगांठेंसबखोलेथे ॥ बैठीथीबुलबुलउसभीतरबहुन्यारीसी ॥ आँखोंविचसबहीकेलगतीअतिप्यारीसी ॥ मजलिशउसजगेकी ऐसीदरसावेथी ॥उपमाकोहेरतमतमेरीघबरावेथी॥ थेउसमेंकारीगरगानेकेकामिलवे ॥ गाफिलहुइजावें सुनिअच्छेहृढआमिलवे ॥ आसवकेसीसेरँगरँगके

मँगवायेथे ॥ प्यालेमतवारोंयुतसबकोपिलवायेथे । खिचतीथीकाफिरनींसारंगयोंकूकेथी ॥ चतुरोंकी पँसल्योंविचकूकेमनुहूकेथी ॥ तबलोशिरथापीलग लच्छैंपरदोंकेथे ॥मानोघटदोनोंवेपूरणदरदोंकेथे॥ सारातनआँखोंविचआतशकाज्वालाथा ॥ कॉंनों विचजाकेलघुदामिनिसाबालाथा ॥ तानोंकीउप जोंकरकाँनोंधरलेतीथी ॥ आशकमतवालेगजअंकु शशिरदेतीथी ॥ हसनाकहिबोलोंकोतीखहगकस नाथा ॥ फैलोंकीघातोंविचनाहकदिलफसनाथा ॥ पाऊंधराडिवडेगतिझूमेझुकजानाथा॥ हातोंकीघा- तोंकमनैंतींदिखलानाथा ॥ जिनकेमुखआगेकुसु- मायुधशरमाताथा ॥ इनकीसीउपमाकोवोभीकब पाताथा॥ उनकेकरकंगनसँगचुरियांयोंचमकेथीं॥ उसपरसबमजालिशकेशीरोंयोंझुमकेथीं ॥ यारोंस बीततहीआँखोंगईमेरीखुल ॥ जगनेपरआयानहिं नजरोंविचएकोगुल ३०१

अथ श्रीमहाराजकुमारकृतपद, टप्पा, ख्याल, ठुमरी लिख्यते ॥ भीमपलासी॥

दिलदेदीदेखोलादिवाने ॥ रबकीकुदरतदेखज लविंदुतेदेहबनि विविधिभूषणभेष ॥ बोलत गिराअमृतसमसुंदरजाकेरंगनरेष ॥ दिवाने०॥१॥ पाँचतत्वचेतनकाहेतेडोलताविविधिविशेष ॥जावि नशुष्ककाष्ठवतछिनमेंसोहीपुरुषअलेष ॥ दिवा ने० ॥२ ॥ मातपिताबंधूत्रियभाईमित्रीपुत्रसुवेष ॥ प्राणप्रयाणसमयसबठाढेकरतकुलाहलपेष ॥ दिवा ने० ॥ ३ ॥ कामक्रोधमदलोभमोहाबिचबूडेसवउ नमेष ॥ नरतनमूढकरतगरुवाईतूँउस्पाकपरेष ॥ दिवाने० ॥ ४ ॥ सारंग ॥ झाँविचालाँथारीलार ॥ पिहरियेझाँरे ॥ डूगरियाहरियाजलभरिया ॥ सूराँ तणीशिकार॥ नटनागरहरश्यामनकरश्यामदडा रीमनुहार ॥ २ ॥ फगुवा ॥ नटनागरमचलरह्यो

माई ॥ नटनागर ॥ होतअकेलोततोखबरपारती
एरीसँगलिएहलधरभाई ॥ नटना० ॥ जादिनमुक
टपीतपटछीन्योएरी वादिनकीसुधविसराई ॥ नट
नागर० ॥ ३ ॥ डफवाजतगरूरभरे ॥ नटनागर
कीविजयउचारत ॥ द्वारद्वारहुरिहारपरेडफ०॥४॥
डफवाजतकुटिलकन्हाईके ॥ नटनागरकेधीटलँग
रकेहलधरजूकेभाईके ॥ ५ ॥ यमुनाजलभरनक
ठिनआली।यमुनाजुल ॥ मधुरमृदंगझाँझडफवाजें
गतनाचतहैंवनमाली ॥ निलजनिशंकनिपटनटना
गर जाहिताहिकोदेगाली ॥ ६ ॥ मनलाग्योमेरो
ननँदीक्योंवरजै ॥ नाहिनशंकनिशंकभईमैंउमडघु
मडगोकुलगरजै ॥ नटनागरसोंमिलूंउजागरत्रासव
ताएकोतरजै ॥ मनलाग्यो० ॥ ७ ॥ डफआ-
गेजावजोरसोरभरमधैरं ॥ डफ० ॥ सासु
कीत्रासउदासरहोंहोंननँदीनाचनहासकरैं ॥
नटनागरपगफूँकधरेतोउ चतुरचुगुललखिचौंक

परैं ॥ डफ० ॥८॥नटनागरछैलअनोखोरी॥नटना
गर० ॥ हमेंतुह्मेंडरनाहिंसखीरी जोकुलवानातिन्है
धोखो ॥ लालगुलालअंगलिपटानेश्यामवरणतन
चोखो ॥ मोरमुकटपीतांवरसुंदर कुंडलकोहद
झोखो ॥ नटना० ॥ ९ ॥ दादरा ॥ प्यारेप्यारीक
रकैविसारोगे ॥ कैसैरहैंगेप्यारेप्राण ॥ नटनागरदु
खदापसहौंगी नाकीजैहितहान ॥ प्यारे ॥ १० ॥
॥ कहरवा ॥ ननँदीकाहेकोभुहारेबाँकेकस्योही
करै ॥ मेरीलागीहैविहारीजीसोंलागलागलाग॥कुल
कानकेऊपरअबहीधरदीमैंआग॥ननँदी०॥नटनाग
रउजागरसोंमेरोमनपाग॥तासोमिलूंमैंतोतनमनध
नसुखत्याग ॥ ननदी० ॥ काहेकाअधरतेरेडस्यो
हीकरै ॥ मेरोलागीमोहनजीसोलाग ॥११॥काफी
दीपचंदी ॥ सखीरीआजश्यामअनुरागरँगेमोसो
खेलनआएफाग ॥ उरद्वैचिन्हऔरपदअंकिततुर-
तसेजसुखत्याग ॥ चिबुकअरुणअधराकजरारेर-

हेमहाश्रमपाग ॥ सखी० ॥ रदछदरेखनखक्षत
लागेकियेंनैनरतजाग ॥ नटनागरऐसीछबिनिरखे
उदयभएममभाग ॥ सखीरी० ॥ १२ ॥ मांडचा
हीमनास्यांरूठो । छेएधूलोम्हासूँहे ॥ ओलूंभा
सुणांलाहेली ॥ ओठाहीसुणास्यां ॥ नागरनटसमु
झास्यां ॥ १३ ॥ वंशीमनवसकरमतमार ॥ वैर
नहाथलगेकातेरे । तेरेदुखअतिदुखितभईहूँजासों-
कहतपुकार॥नटनागरबेदरदनिठुरहैंतूतोनेकाबिचा
र॥१४॥ सखीआजश्यामकोपकरनचाऊंतोवृषभा
नुकुमारि॥अंजनआँजकरूंदृगकारे गुहिडारौंउरहा
र॥चोलीचारुचटकरँगचूनरपाँयनपायरपार॥सखी
०॥वेंदीभालकानबिचझूमर बिनताज्योगुहिबार ॥
नटनारऐसीछबिनिरखो फेरकरोंहुरिहार॥सखी०॥
१५॥देश ॥ ह्यानेतोलारालीज्योराज॥थाँकारणकु
लकाँणगमई छहनदीज्योराज ॥ ह्या ॥ नटना
गरवृंदाबनकीनीं वामतकी ज्योराज ॥ ह्याने० ॥

१६ ॥ आँखाँलाँबीतीखीबाँकीमुरडभरी ॥ रुडिमु
रडभरी ॥ नटनागरऊँचीपुनिनींची बाँकीऔरति
रीछी ॥ बाँईसलजदाहनीचितवन विषमडसतजनु
बीछी ॥ आँखाँ ॥१७॥ लोयनविचफैलभऱ्योहैकि
फंद ॥ कपटभऱ्योहैकीप्रीतभरीहै भूतभऱ्योहैकी
जंद ॥ नटनागरमोरेठीकपडीनहिं साँचीकहोजीमु
कंद ॥ १८ ॥ काहेविषघोल्योराधेनैननबीच॥ घो
ल्योसोतोचषअनियालाहैनागरभौंहनगीच॥नटना
गरनेंजहरचल्योहैसुधादृष्टिकरिसींच ॥ काहे॥१९॥
॥ माऱ्याहींन्हाखैछैथाँरासोंह ॥ नटनागरतिरछी
सीचितवन जगठगणीछैलगणीभोंह ॥ माऱ्या०
॥ २० ॥ देख्याईजीवाँछाँप्यारासेण ॥ अजकलगी
छेअबतो ॥ देख्याई० ॥ झलमलमुकटकुंडलरो
झालोबालालागेछैथाँरावेण॥देख्या०॥नटनागरनि
रखणदोनूखरो मतजीचुरावोबाँकानैण ॥देख्याई०
॥ २१ ॥ आछाँरीज्योंआपह्मानैंविसरमतजाज्यौ॥

मथुराजायज्यौछायरहोतो पतियाँवेगपठाज्यौ ॥ नटनागरऊजडकरचाल्या ब्रजहरिफेरबसाज्यौ ॥ आछाँ ० ॥ २२ ॥ होजीहटछाँडोराधेजीनिप टनिठुरताईजोर ॥ आपतणाँझगडामैराधेअबतो हैहैभोर ॥नटनागरनिरखणदोनखरोजितिहाँरोगूँघ टकोर ॥ २३ ॥ बना ॥ बनीचितलाजमनोजसता वै ॥ दोऊबीचजियादुखपावै ॥ ब ० । लाजकहत नटनागरलिखनामदनसल्हाउलटावै ॥ अैसीरीत विलोकितलौकिकचतुरनकेमनभावै ॥ २४ ॥ ब नाजीतेरीसूरतमदनसँवारी ॥ सबनिरखछकेनरना री ॥ रतनजटितसेहराशिरसोहतकलँगीकीछबि भारी ॥नटनागरदुल्हहउतदुलहन श्रीवृषभानुदुला री ॥२५ ॥ बनाजीथाँरीलटकचालपरवारी ॥ सब निरखछकेनरनारी॥बनाजी ०॥ सूवापागकेसरिया जामाँजापरगजबकिनारी॥नटनागरऐसीछबिनिरख तदुलहनराधाप्यारी ॥ २६ ॥ निपटअनोखालोय

णमुरडभऱ्या ॥ अतिअलसाणसुनिंदेपणसूँजनु दोयलालधऱ्या ॥ नटनागरक्यूँकपटकरोछोजाहर जागकऱ्या ॥ २७ ॥ सोरठ ॥ काँईअणियालानै णालागभरी ॥ अ० ॥ जोदेखेजाकोमनहींमसतहै कैसीजकपकरी॥नटनागरविनमोलकीचेरीगोपीभा गभरी ॥ २८ ॥ ह्मॉनैतोकरोहिगाजीदिलसूँदूर ॥ नवलनेहकुवज्यासूँकीनोउणकेरहतहजूर ॥ ह्मॉसूँ तोअपराधवण्योछेभूलोक्यूँनजरूर ॥ नटनागरके दोयमुसाहववेऊधोअकरूर ॥ २९ ॥ ओ लूडीआवेछेनिराट ॥ ओजिओछोगालाथांरी ह्मॉनै ॥ ओ० ॥ प्राणपतीजीउमरह्मारी वीती जोताँवाट ॥ नटनागरक्यूँविलमरह्याछोविकट हुवाकीघाट ॥ ओ० ॥ ३० ॥ हेलीह्मॉनेनिंदियान आवे ॥ छिनछिनविरहसतावे ॥ हेली ॥ नटना- गरसुदभूलगयाछेकुणवाँनैंसमुझावै॥हेली० ॥३१॥ धीराधीराहालोराविहारीजी ॥ लाराँथारीआवाँ ॥

सबसखियांह्मांरीगेलपडीछेपाछीफिरसमुझावाँ ॥
नटनागरथाँप्रगबकरोछोह्मेछानैंछानैंप्रीतछिपावाँ॥
॥ ३२ ॥ दुखमतदीजोजीप्रीतलगाय ॥ होजीरू-
खावचनारोजी ॥ फीकानयणारोजीदुखमतदीजो-
जीप्रीतलगाय ॥ नटनागरब्रजबालविसारीयूँनवि-
सारोहाय ॥ दुख०॥ ३३ ॥ ख्याल॥बाल्हीकरदी-
ज्योनाँसुरत बिसार ॥ होजीमनमोहनप्याराजी ॥
वाल्ही० ॥ छलबलनिपटकपटपटकरणीराखत-
होरिझवार॥ नटनागरसुनगोपियनकीगतडरपत-
प्राणअधार ॥ ३४ ॥ कालिंगडा ॥ लाग्योथाँरा-
नैणारोसलूणोपाणीलाग्यो॥ लोकलाजसबहीतज-
दीनींगुरजनरोभयभागो॥नटनारज्यानेछेह्वताओ
सूताछोकिनाजागो ॥ लाग्यो० ॥ ३५ ॥ दीठो-
थाँरीप्रीतरोपतंगीरँगदीठो ॥ लागतबेरकसूँवीसो-
लाग्योफेररह्योनाहिंछीठो ॥ नटनागरह्माँबहुतर-
चायोनाँहिनहोतमजीठो ॥ दीठो ॥ ३६ ॥ रासि-

याजीबेराजीबोलोजीभलाँ ॥ थाँराचितरोचाह्यो-
कीनौंजीभलाँ ॥ ज्योचाह्योसवहीथाँकीनोंमनरी
गाँठाखोलोजीभलाँ० ॥ नटनागरमेटीजेझगडो
लीजेनवलमाहोलोजीभलाँ ॥ रसि ० ॥ ३७ ॥
दादरा ॥ लागीलागीजरूरभोरिनजरकहुँलागी ॥
नटनागरकीसौंहकरतहौंविरहविथातनजागी॥जरू
रभोरी० ॥ ३८ ॥ लागेलागेजरूरनैनाकुटिलकहुँ
लागे ॥ नटनागरजाहरगुनगुनियतप्रेमउदधिकहुँ
पागे ॥ कहुँपागेजरूर लागेलागे ॥ ३९ ॥ बाँ
काथाँरानैणअदाँकाउडलागै ॥ लागतहीसुधबुध-
बिसराइरोमरोमविषजागै ॥ नटनागरतनमनधन-
सोंप्यो अबकहिजियरोमाँगै ॥ ४० ॥ घणासा-
वरघाल्यानोखानैणानै ॥ घणा०॥ इणव्रजकीउ-
पहाँसनअटक्याहोयमसतमदहाल्या ॥ १ ॥ न-
टनागरवरज्यानहिंमानैव्रजतहीवढचाल्या ॥ घ-
णा० ॥ ४१ ॥ दीठीधीठानैणारीअनोखीगतदी

ठी ॥ अंजनसहितबिहदहदबाँकीमदछकलागत मीठी ॥ नटनागरउरकंपकढणकूंअदभुतदोयअँगीठी ॥४२॥ मदछाकेनैणाबाँके॥विनअंजनअधिकअदाँके ॥ कंजखंजमृगमीनाविनिंदितहोतकटीलेढाँके ॥ नटनागरउरपारकढतहैनिरखतनेकनिसाँके ॥ ४३ ॥ मोरेनैनारहतछविछाके ॥ छाके २ अधायमोरे०॥नागरनटलखिलटकरीझिगयेरिझवारअदाँके ॥ ४४ ॥ कालिंगडा ॥ कहोजीक्यूँनआवोआवोह्मारेदेस ॥ मूरतकोटिमनोजलजावणक्यूंदेखणतरसावो ॥ नटनागरज्योढीलकरोलातोपाछेपछितावो ॥ कहोजी ० ॥ ४५ ॥ सोहनी॥पमाँपमाजीकरहारीपलव ॥ लियाथानेअंजनअधरपीकपलकाँपर ईछाविरीबलिहारी ॥ नागरनटअलसाणअनोखीछायरहीछविथाँरी ॥ ४६ ॥ परज ॥ उधोजीक्यूंलायाकागदकपटभऱ्या ॥ जोअकरूरकरीसोइजाणीथाँराकरतकऱ्या ॥ न-

टनागरनोओरभरोसोविसरायांविसऱ्या ॥ ४७ ॥
कहतालजावाँछाँजीओगुणथाँरा ॥ उत्तमप्री
तकीरीतनजाणोनीचप्रीतवसऱ्याँरा । नटनागर
छोजीथाँनिरगुणक्योंरीझोगुणम्हांरा ॥ कह० ॥
॥ ४८ ॥ ऊधोफेरपधारेहोव्रजमें ॥ प्रथमआयउर-
जारगएथेकछुकरहेअबजारैं ॥ ऊधोंवेगसिधारो-
व्रजतेंतुमजीतेंहमहारैं ॥ नटनागरसोंयोंजाकहियो
कुबज्याकौंनाविसारैं ॥ ४९ ॥ ऊधोजीकरोछोआ-
छीबाताकूडी ॥ ज्ञानभक्तिवैरागसिखावो एक्यूँ-
लागैरूडी ॥ नटनागरपणजोगलिखेछैप्रेमरीतसब
बूडी ॥ ५० ॥ माधोजीपठाईपातीज्ञानभरी ॥
प्रेमसुधारसमूरलिख्योनाविषकीपोटधरी ॥ नटना-
गरइतकीसुधबिसरी कैसीकठिणकरी ॥ ५१ ॥
उधोजीथाँरेसोमणतेलअँधेर । योगसिखावतभोग-
कमावतवाकुबजाकीवेर ॥ नटनागरछेचोरजनम-
कासकैप्रकाशनहेर ॥ उधो० ॥ ५२ ॥ ठुमरीमुल

तानी ॥ज्यानीजीसेजुदीमतकीज्योरे॥ मतकीज्यो दुखमतदीज्योरे। नटनागरतेरीचेरीकीछिनछिन-मेंसुधीलीज्योरे॥८३॥ ज्यानीतोसोंकबूनाबोलोंरे॥ नाबोलोंनाबोलोंनाबोलोंरे ॥ नटनागरतोसेकपटी-सोंकपटगाँठनाँखोलोंरे॥ ज्यानीज्यानी० ॥८४॥ नपूछ्योतुमगोपिनतेप्रेमनगरकोपंथ॥ तुमप्रेमन० नटनागरकछुरीतनजानीहोकुबज्याकेकंथ ॥ नपू-छ्योगोपिनतेतुम ॥ ६८ ॥ सोवनदेसैयाँनेक-ढरकगईआधीरैन ॥ नटनागरअतिनींदसतावत नीठसमेंअबलादीरे ॥ ८६ ॥ टप्पाजिलाके ॥ खेडोंदाजाणानहिंखूबामियाँवे ॥ नागरनटखटलोग वहादेसवजालिममहबूबामियाँवे॥८७॥ छँदडेजा नीतैंडेवेजिदडीमैंडी॥ जानीतूँ ॥ नागरनटतैंडदे खेबिनबेकलियाँदिलनू ॥८८ ॥ हरदमरेदीतैंडी यादमियाँवे ॥ नटनागरतैंडेबिनमैंडादिलकरदाफ रियाद ॥ ८९ ॥ इस्कोंदाउलझेडनसुलझैगाज्या

नीवे ॥ नागरनटअबक्योंघबरांदांज्योंनिवडेज्योंनि
वेड ॥ ६० ॥ सांडेनालबेदिलनूंकिताबरबाद ।
नागरनटज्योंज्योंदुखदेंदांकितकरदीफरियाद ६१
अैधुलापनांसूंहेलीहेमाडयांहींमिलांल ॥ नागरनट
ह्रांसुंमुरडरह्याछे दांवणजायझिलांल ॥ ६२ ॥
प्यारेसाढेमुखडेदाझमकादिखलादे ॥ हाहातैंडेमु
खडेदा ॥ नटनागरकछुओरनचांदाअजदीदारछ
कादे ॥ प्यारे ॥ ६३ ॥ झांकीकरादेतैंडीबांकीन
नजरांकीमानू० ॥ नटनागरवेअदांकीआंखे विष-
लानेविचकीदुखसानूं॥ ६४ ॥ भैरवीठुमरी ॥ नैना-
हमारेदुख्यारेभएसखियांनंदवारेकारेबिनां ॥ कारे-
बिनाबंसीवारेबिना ॥ नटनागरहृगउमगचलतहैं
प्यारेतिहारेनिहारेबिनां ॥ ६५ ॥ झंझोटी ॥
मचलरह्योवृषभानुललीसों ॥ नटनागरचितबहुत
निठुरहैकाटिकुचमारेगुलाबकलीसों॥मच० ॥६६॥
मिठडीतैडीमैंमीठेबोलसुणाजा ॥ मानू ॥

नागरनटइकगल्लसुणादेजाविचबारलगैकीसाँन ॥
॥ ६७ ॥ जटियोंदेजालिमनैणवचाणा ॥ जाहर
नैणजटीदैजालिम तूँकींकारणहोतानिसाणा ॥
॥ ६८ ॥ साढीगलियोंविचआणानभादासानूं ।
गोरेदेनालयारदीवातै दिलउस्याकडुखाँ
दाकानूँ ॥ ६९ ॥ फाग ॥ अकेलीपारकैमोकूँरंगमें
भीजोयडारीरे ॥ धीटमोकूरंगमैभी० ॥कुटिलमो
कूरँ० ॥ नागरनटतोसोंसमझौंगी निठुरमोकूँप
करभिगोयडारीरे ॥ दयारेमोकोपकरबिगोयझा
रीरे ॥ निलजमोकूँप० ॥ ७० ॥ पनघटपरझुरम
टजाटियोंदा ॥ जटियोंदानटखाटियोदा ॥ नटनाग
रवैंहवाटकढोकोउझटपटहैदाखटियोंदा॥ ७१ ॥

ठुमरी–जीराजाथेरेनजरियाँलागी ॥ नटनागर
कोइवेगबुलाओ अजवव्यथातनजागी ॥ जीरा
जायरे॥ ७२॥ खम्माच॥ऊधोजीविसारीह्माँनैमथुरा

जाय ॥ ह्वाँतोप्रीतकरीछीवाँसूकुलकीरीतगँमाय॥ नटनागरसारीसुदभूलथाकुबज्यादौलतपाय॥७३॥

॥ इतिरागख्यालटप्पासंपूर्णम् ॥

सवैया--गहिबाँधेयशोमतिऊखरसों, तिनकोचितक्षोभसह्योकरिये॥गुघरारेलटाभरेगोरससोंभयेधूसरधूरबह्योकरिये॥नटनागरचाहचढीचितमें, तिनकोचितचारुचह्योकरिये॥अहोमाँखनचोरएहीछविसों,मेरीआँखनबीचरह्योकरिए ॥१॥ मोरकेपाँखनकोशिरभूषन,काँखनवेतगह्योकरिये ॥ तबताछिनकीछविकैसेकहौं,लखिलाखनमैन दह्योकरिए ॥नटनागरभाषणबीचनहीं नितदाखनस्वादलह्योकरिए ॥अहोमाँखन०॥२॥ गुंजराहियरेविहरेतनशोभितधातुविचित्रलह्योकरिये ॥ बँसुरीवनमालकँधाकमरी,लकुटीकरबीचगह्योकरिए ॥ नटनागरमोरपँखाशिरभूषण,गोधनसंगवह्योकरिए॥अहोमाँखन०।३।

॥गुणहींविनहारहियेउघरे,दृगलालनलालीबह्योक-
रिये॥अधराँनपैअंजनभालमहा, वरभूषणअंगहयो
करिये ॥पलपीकलग्योनटनागरजू,अलकैंबिथुरीउ
मह्योकरिये॥अहोमाँख० ४ ॥ यहवेणीगुहीगहिकै
ललिता,शिरचूनर चारुसह्योकरिये॥ किनचोलीर
चीअतिचातुरीसों,नथवेंदीविशाखाबह्योकरिये॥न-
टनागरपायरपायनमें, वृषभानुसुतायोंचह्योकरिये
॥अहोमाँखन० ॥ ५ ॥ मघवाजबकोपकियोव्रज
पै,वहैकोपकोलोपबह्योकरियो ॥ गिरिकोकरधारि
उबारिकैगोधन,गोपरुगोपीचह्योकरिये ॥ नटनागर
वेणुधरीअधराँनहि,प्रीतिवियोगसह्योकरिये॥ अहो
माँखन०॥६॥वलकेशवधायधरीमथनी,नवनीतभ-
रेसुचह्योकरिये॥इतदेहरीद्वारखरीयशुदा, सुततक्र
भरेसुलह्योकरिये ॥नटनागरलालसुनोइतनी,अबमैं
जोकहूंसोकह्योकरिये ॥ अहोमाँखनचोरए० ॥७॥

निसानीशिरखुलीमहाराज रतनसिंहजीकी।

तखतजहाँशिरआली दिल्लीशहरशाह ॥ शा
होंशीशकमाली आदिलशाजहाँ ॥ दहशतजा
हिकराली सातौशाहशिर ॥ तिनदाहुकमअदा
लीऊपरहिंददे ॥ फरजंदबहुतखुशालीअरब
हंनोबाहार ॥ औरंगदखणउथालीपूरबसुज
शाह ॥ मुहुमोबहुतकरालीबगसीबादशाह ॥
पुरबदखणउथालीतेगोंमारमार ॥ वोहोतादिनोंब-
हालीवैसेहीरही ॥ दिल्लीऊपरहालीसेनदुहुंनदी ॥
अकवकधरवेहालीमौलाक्याकरै ॥ शाहजहाँसुन-
ह्वालीदरदाँबीचदिल ॥ बाईसीशिरघालीजेसिंघजे-
नगर ॥ पूरबमथ्थेचालीसहसौंकरनजग ॥ औरं-
गशीशहकालीनवखंडमारवाड ॥ सित्तरखाँनध-
मालीबहत्तरउमराव ॥ जसवँतमूहअगालीबोलत-

आफरी ॥ ञ्जाहहुकमशिरझालीअदबवजावरद ॥
दस्तवस्तमुहलालीसहसोंयूँअखां ॥ हुकमकहासः
हसालीबंदारूबरू ॥ हुकमदादरुहआलीऔरँगखा-
कसाक ॥ बारय्याबकरचालीसेनजसाहुदी ॥ तेग-
दस्तवरझालीफीलसवारहै ॥ दस्तमूँछवरघाली
जसवँतयोंअखै॥ फौजकरौंबेहालीपकड़ूँपादशाह॥
सेनचलीधरहालीदंतवराहडिग ॥ लचकैशीशफ-
नालीचारौंदिगडोल॥ कच्छपपीठतपालीमरदौंमच-
कलग ॥ नादियोंथकितरहालीसुनजसवंतनू ॥
समदशोपभयखालीखंगेतेगगहि ॥ ऐसीसेनजला-
लीवरऔरंगजेव ॥ खेतउजेणसझालीतेगौंतीरकज॥
औरंगसुनअहवालीसोजसतनवदन ॥ दढौंकूँचाढि-
यालीवीवेवहुतसँग ॥ जमउरवीचदहालीजालमतु
रकालिय ॥ चीतैसेरलेयालीमारैमूंकियो ॥ पीयेमद
वहुझालीनुकलकयजूंमसा॥मुगदरवोहोतविशाली
खूबाहिलाँवदे॥तीरंदाजअकालीमारैमोतियां ॥देख

णाख्यालकरालीऔरँगनौअरुज ॥ हल्लीसैनउताली पोसदआपताब ॥ पिछ्लेरहेत्रखालीअगलौंआबमि ल ॥ दोऊसेनसुथरालीअंखौसेअखी ॥ जसवंतफौ जसँभालीभैयारतनकहाँ ॥ फिदव्योंनेगुजराली राजारतनपुर ॥ साजजूदगयचाली लेणरठोड नूँ ॥ सुरथलिखेरतनालीदिलह्वाबाकबाक ॥ खत नजरौबिचभालीतोसाखानखुट ॥ बगतरझिलम कडालीसुंडौपख्यारो ॥सकलीगरौंउतालीहक्केकूब कू ॥ सेफोबोसुथरालीअंगुलबाडखिच ॥ रतनाग रउमगालीबरशिरसहजदौं ॥ त्यारकियेतेजाली चढियेउरसखंब ॥ मनाघटाकजरालीबादरजोश आब ॥ वहदीजमुनकरालीमिलसामुद्रमझ ॥ रत-ननजरबिचभालीजसवंतभारधर ॥ अबअखबार सुनालीकालेगिरँदनू ॥ सुनकैभईखुशालीजंगबि-चगुसलदी ॥ सबबीततनभलालीचखतोपैलिखै ॥ दिल्लीतखतकरालीतेगोंबाडपर ॥ औरंगसुनअहवा

लीआगव्रजागजग ॥ नौरंगउलटकहालीवोहोतहै खूबबात ॥ तोपैंदगतकरालीफौजोहलचली ॥ अखअलाअलयालीखिबरखूटए ॥ हरियकबागों हालीटूकपहाडदे ॥ बाजैंखगइकतालीवररुखसुग-लयो ॥ खागोवाडखरालीआपसबीचखूब ॥ देखन ख्यालकपालीभागेध्यानतज ॥ चौसठलखखपरा-लीहडहडहँसतवे ॥ कलकैबीरकरालीहलकैसा कण्यो॥गोराकालाकालीविहवलहैरहे॥भूतप्रेतढिग चालीमानोकरनवत ॥ हूरपरीसबकालीमानोभं गचित ॥ छंडवेमानौचालीशिरपररतनत्रास ॥ गोकुलतुरकविलालीसुरपतरतनसी ॥ तेगोंत्रझड झडालीपहरोंतीनलग ॥ रुधिरनदीउबकालीमथे मछरूप ॥ मीनतडफज्योंजालीवगतरबीचधड॥ गृध्रअंतलेचालीजिनुपतंगडोर ॥ रतनपडेरणखा लीऔरंगधूअडग ॥ तखतदिलीअलआलीदादन रतुकरा ॥ उमरावौंवेहालीरंकौसरफराज ॥ जीता

जंगकरालीकरमकरीमदे ॥ बरमरदुमखुदआली चाहेसोकरै ॥ कितरेहालकहालीरतनेरदनदा॥१॥

सोरठा—खागाँबलखेडेचतै,झंझियोआरगतुरक ॥ घणपडदाँविचघेच, अथमायोमाहेशउत ॥ १ ॥ औरँगआगब्रजाग, प्रलैकालपसर्‍योप्रथी ॥ लूवाँ चरसणलाग, सुरपतदूजोरतनसी ॥ २ ॥ औरँग अडआकाश, हिल्लोहलकरहालियो ॥ सीहाउतक रहास, ऊफणतोराख्योअबल ॥ ३ ॥ औरंगगयण अधार, भुजातोलआयोभिडण ॥ जहरशंकराजिम जार, ऊभोतूँमाहेशउत ॥ ४ ॥ रयणागिरराठोड, बलकाढ्योतैंबीबरो ॥ लडलोहाँसूँलोड,पाधरतैकी धोप्रगट ॥ ५ ॥ छाकियोगजछंछाल, औरँगयूँडा णाँलग्यो ॥ रतनलँगरपगलार, तैंबाँध्योमाहेशत ण ॥ ६ ॥ औरँगलहरअथाह, चढीघणीचोंडाहरा॥ गयंदखुराँसूगाह, तैदाबीमाहेशतण ॥ ७ ॥ औरं गभमंगअथाह, बाईवंधवादीबणे ॥ सेलउडदक

रसाह, कंडियाविचघाल्योकमध ॥ ८ ॥ हरणाइ कपतसाह,धूध करेदाटीधरा ॥ बॉईबंधवाराह, तैंकाढीमाहेशतण ॥९॥ औरँगतिमिरअपार, पस न्योपलऊपरप्रबल ॥ जकेअँधारोजार, तूँऊगोमाहेशतण ॥ १० ॥

इति श्रीमहाराजकुमारश्रीश्री १०८ श्रीरत्नसिंहजीकृत नटनागरविनोदसंपूर्णम् ॥

पुस्तकमिलनेकाठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर"छापाखाना-(बम्बई.)